ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24 अंक - 01 अप्रैल-I-2022 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

दिव्यता दिवस के रूप में मनाई दादी हृदयमोहिनी की प्रथम पुण्य तिथि

'अव्यक्त लोक' का लोकार्पण

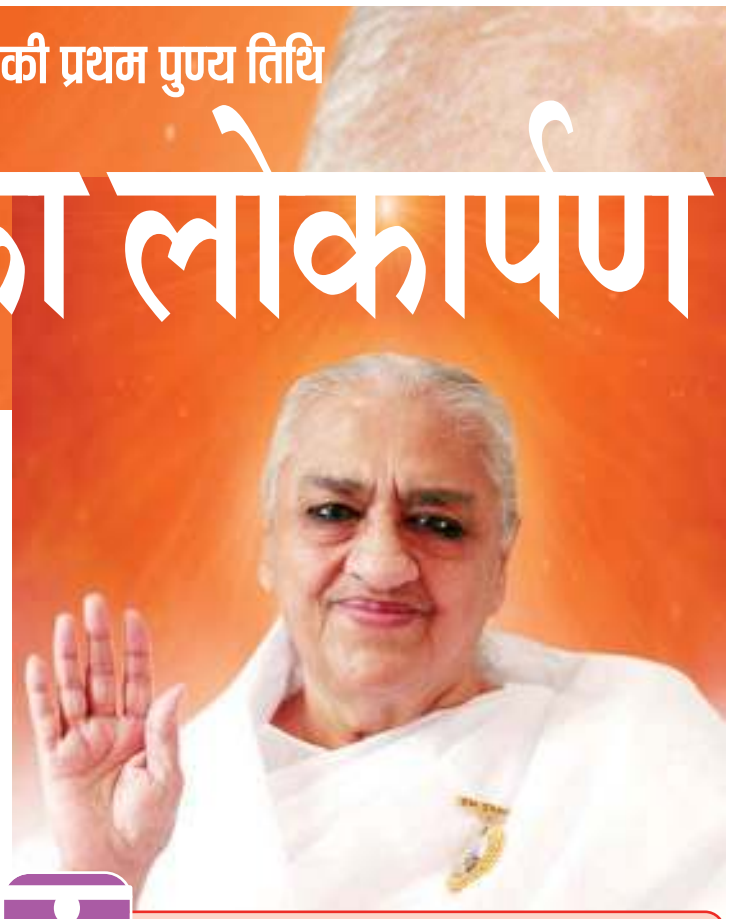

शांतिवन-आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी पिछले 11 मार्च 2021 को अपने देह का त्याग कर अव्यक्त वतन वासी बनीं। उनके प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर शांतिवन, डायमण्ड हॉल के पास उनकी स्मृति में बने 'अव्यक्त लोक' का लोकार्पण 11 मार्च 2022 को किया गया। इस मौके पर विभिन्न देशों सहित भारत के हरेक प्रांत से करीब पंद्रह हज़ार लोग दादी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने पहुँचे। दादी जी के प्रथम पुण्य स्मृति दिन पर संस्थान के वरिष्ठ भाई-बहनों ने विशाल डायमण्ड सभागार में दादी के साथ की स्मृतियों को सभी के साथ साझा किया। दादी जी की डिवाइन लाइफ आज भी सभी के मन-मस्तिष्क पर तरोताज़ा है, जो भूले नहीं भुलाई जा सकती। इस अवसर पर विशेष त्रिदिवसीय सामूहिक राजयोग मेडिटेशन का भी आयोजन किया गया और देश-विदेश में फैले इस संस्थान के हरेक सेवाकेन्द्र में भी 'डिवाइन लाइफ' के अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अव्यक्त लोक के केन्द्र में दिव्य अलौकिक आभा को बिखेरती मणि, आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत, जो सम्पूर्ण विश्व में आध्यात्मिक ऊर्जा निरंतर प्रवाहित कर रही है। दिन के समय में जहाँ यह अव्यक्त लोक सूक्ष्म वतन की भांति श्वेत, शांत, शीतलता बिखेरता हुआ नज़र आता, वहीं ब्रह्ममुहूर्त के समय में, लाल प्रकाश में वह परमधाम की अनुभूति कराता है। जैसे सभी ब्रह्मावत्स दादी जी के माध्यम से प्रभु मिलन मनाते रहे हैं, उसी तरह आने वाले समय में दादी जी के इस यादगार के द्वारा परमात्म मिलन का अनुभव करते रहेंगे।

11 मार्च 2021 को ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी का मुम्बई के सैफी हॉस्पिटल में देवलोकागमन हो गया था। आप 93 वर्ष की थीं और मात्र 9 वर्ष की आयु में ही संस्थान से जुड़ गईं। आपको बचपन से ही परमात्मा शिव द्वारा दिव्य दृष्टि का वरदान प्राप्त था। वर्ष 1969 में संस्थान के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद आपने अपनी दिव्य दृष्टि की शक्ति से लाखों भाई-बहनों को परमात्म संदेश सुनाकर संदेशवाहक की भूमिका निभाई। आपको सभी प्यार से दादी गुलज़ार भी कहते। दादी की योग-तपस्या का ही कमाल था कि आपके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आपसे दिव्य-अलौकिक अनुभूति होती। आपका दिव्य और तेजस्वी चेहरा रूहानियत से भरपूर था। आप सरल, निश्छल और मृदुभाषी थीं। आपके सानिध्य में आने वाले अनेकों को रूहानियत का अनुभव होता। आपके सामने कोई भी अपनी समस्या लेकर आता तो आप दो शब्दों में ही उसकी समस्या का समाधान कर उसे निश्चिंत कर देतीं। दादी जी अक्सर योग-तपस्या और साइलेंस की गहन शांति की अनुभूति में रहतीं। ऐसी महान दादी की प्रथम पुण्य तिथि पर आपको हृदय की गहराइयों से श्रद्धा सुमन अर्पित।

टावर ऑफ डिविनिटी

'अव्यक्त लोक' 5000 वर्गफीट क्षेत्रफल में बना है। दिव्य स्तम्भ की संचरना 3000 वर्ग फीट में की गई है। दादी जी के चरित्रों को दर्शाते हुए 22 स्तम्भों के निचले हिस्से में पवित्रता के सूचक मयूर (मोर) की आकृति बनाई गई है। स्तम्भों के ऊपर सुन्दर कमान है जो कवच की भांति 'अव्यक्त लोक' के चारो ओर सुशोभित है। इसमें प्रयुक्त 'ब्राज़ीलियन मार्बल' पचास डिग्री सेल्सियस गर्मी में भी शीतल रहता है। विशिष्ट राजस्थानी कारीगरों के द्वारा अनेकों कलाकृतियों से इस स्मारक को तराशा गया है। 100 से भी अधिक कुशल कारीगरों व ब्रह्मावत्सों के अथक प्रयासों से लगभग दस माह के भीतर यह भव्य स्मारक 'अव्यक्त लोक' साकार हुआ। विश्व के चारो दिशाओं की सेवा करने के यादगार स्वरूप 'अव्यक्त लोक' की छत में चारो दिशाओं में चार गुम्बज बनाये गये हैं एवं इसी के मध्य में 'टावर ऑफ डिविनिटी' दिव्य स्तम्भ बनाया गया है, जिसके चारो तरफ 'डिग्निटी, डेडिकेशन, डिटैचमेंट और डिविनिटी' उल्लिखित है जो दादी हृदयमोहिनी के जीवन के आधार स्तम्भ रहे। ये आज भी अनेकानेक आत्माओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं और सदा बना रहेंगे।

दादी जी के जीवन से मुख्य शिक्षायें

दादी हृदयमोहिनी का व्यक्तित्व ऐसा था मानो वे किसी अलौकिक दुनिया में ही रहती हों, ऐसी सभी को अनुभूति होती थी। दादी की डिवाइन पर्सनैलिटी सभी के हृदय को स्पर्श करने वाली थी। वे तमोगुणी दुनियावी वातावरण से बिल्कुल निर्लिप्त थीं। उनकी दृष्टि, कृति निर्मल एवं पवित्र थी। दादी जी के दिव्य व्यक्तित्व में कुछ मुख्य धारणायें थीं जो सबको अनुभव होती थीं, उसी आधार पर मुख्य रूप में चार बातें भी अभिलेखित हैं।

पहला, मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई

दूसरा, सादगी जीवन का सर्वश्रेष्ठ श्रृंगार है

तीसरा, सदा खुश रहो, खुशियां बांटो, कुछ भी हो जाये खुशी न जाये

चौथा, सम्पूर्ण पवित्रता ही हमारी शक्ति है

परमात्म मिलन का ज़रिया... पवित्रता

स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन अर्थात् स्वयं के कल्याण से ही विश्व का कल्याण होगा। अगर हम ऐसी शुभकामनायें लेकर आगे बढ़ना चाहते हैं तो पहली शर्त ही है स्वयं का कल्याण करना। इसी संदर्भ में 'स्व' के प्रति सही मायने में अपने को जानना और उसे सच्चे रूप में समझना। अगर देखा जाये तो हम एक पवित्र आत्मा हैं, पवित्रता हमारी पर्सनैलिटी है, पवित्र रूप ही हमारी रीयल्टी है और रॉयल्टी भी।

स्व-हित के लिए पवित्रता का होना बहुत ज़रूरी है। हम इसे सूक्ष्मता से देखें, समझें व मूल में जायें तो उस निष्कर्ष तक पहुंचेंगे कि हमारी वृत्ति में क्या है। सबसे पहले हमारी वृत्ति ही वो केन्द्रबिन्दु है जहां से हमारी पर्सनैलिटी का निर्माण होता है। तब तो कहते हैं, जैसी आपकी वृत्ति होगी वैसी आपकी दृष्टि होगी और वैसी ही आपकी कृति होगी। तो मूल आधार वृत्ति है ना! वृत्ति को पवित्र करना, यही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। वृत्ति है बीज और बीज से ही तो वृक्ष निकलकर फैलता है ना! अर्थात् ये उसी की रचना हुई ना! अब हम इसे गहराई से समझते हैं।

पवित्र स्मृति व संकल्प हमें ऊर्जावान बनाते हैं। अर्थात् हम अपने को तरोताज़ा महसूस करते हैं। तो हमें अपनी वृत्ति को परखने और समझने के लिए अपने संकल्प और स्मृति को देखना होगा कि ये कैसी क्वालिटी के हैं। ये स्व-हितकारी हैं या अकल्याणकारी हैं। अगर स्व-हितकारी हैं तो पवित्रता का बल स्वयं ही स्वयं में अनुभव करेंगे। पवित्रता परमात्मा से मिलन कराने का ज़रिया बनती है। जितना हम पवित्र हैं उतना ही परमात्मा के नज़दीक हैं। पवित्रता परमात्मा का प्यारा बनने में एक श्रेष्ठ साधन है। पवित्रता अर्थात् पवित्र वृत्ति। पवित्र वृत्ति परमात्मा की दुआएं प्राप्त कराती है। न सिर्फ परमात्मा की दुआएं अपितु उसके आस-पास सारे वातावरण या साथियों के दुआओं के पात्र बनाती है।

ब्र.कु. गंगाधर

हम विशेष तौर पर अमृतवेले परमात्मा के साथ मिलन मनाने के लिए बैठते हैं तब हम क्या करते हैं? सोचें ज़रा! यही तो करते हैं ना कि परमात्मा पवित्रता का सागर है, वो इतना प्योर है तब तो इतना शक्तिशाली है! और हम उनके बच्चे भी उतने ही प्योर हैं। यही तो करते हैं ना! परमात्मा सर्वशक्तिवान है तो हम मास्टर सर्वशक्तिवान हुए ना! अर्थात् जो परमात्मा में शक्ति व ऊर्जा है वो हममें भी है। माना हम सर्व शक्तियों के खज़ानों के मालिक हैं। ऐसी महसूसता हम विशेष तौर पर अमृतवेले करते हैं।

पर कभी-कभी हम अपने आपको देखने और जानने की कोशिश करते हैं तो अपने में कहीं न कहीं कमी-कमज़ोरी का एहसास होता है। ऐसा क्यों होता है? इस तरफ आपका ध्यान दिलाने की कोशिश करते हैं। कमज़ोरी महसूस करने के मुख्यतः तीन कारण हैं। पहला परचिंतन, दूसरा परदर्शन, तीसरा परमत। हम पुरुषार्थ के मार्ग में पवित्रता की स्मृति को व अपने स्वयं में मौजूद शक्तियों से विस्मृत हो जाते हैं तभी तो निर्बलता का एहसास होता है। परचिंतन का सीधा सम्बंध हमारी सोच से है। और सोच का केन्द्रबिन्दु हमारी वृत्ति है। जैसी वृत्ति है वैसा ही सोच व चिंतन हमारे चित्त पर आता है। वृत्ति माना वृत्त, गोल, वृत्ताकार। अगर बार-बार कमज़ोरी के संकल्प हमारे चित्त पर आते रहते हैं तो हमारी वैसी ही वृत्ति बनती जाती है। तो कहते भी हैं ना, परचिंतन पतन की जड़ है। यानी कि पतन की ओर हमें ले जाती है।

दूसरा है परदर्शन। माना पराया दर्शन। अर्थात् जो भी हम बाहर देखते हैं वो सोच व चित्र के माध्यम से हमारे मन के अंदर रिकॉर्ड होते हैं। और मन के द्वारा बारंबार ऐसा होने पर वो चित्र हमारे मानस पटल पर उभरता रहता है। उससे हमारा देखने का नज़रिया वैसा ही बन जाता है। मान लो कि हमने लक्ष्य विरोधी चित्र देखा है और उसी का मानस पटल पर बारंबार देख कर उसी की फीलिंग में रहते हैं तो हमारी वृत्ति वैसी ही बनती जाती है। उसी की टेस्ट हमें अपने अतीन्द्रिय सुख से वंचित करती है। इस जग में यदि सबसे सुंदर, श्रेष्ठ व शक्तिशाली कोई है तो सत्यम् शिवम् सुंदरम् ही है। उसके सामने सब फीके और नाशवान है। तो यदि हमें स्वयं को शक्तिशाली बनाये रखना है तो परदर्शन से स्वयं को बचाये रखना होगा।

तीसरा है परमत। परमत ने हमें कितना भटकाया है, इसके हम सभी अनुभवी हैं। शास्त्रों की मत, व्यक्तियों की मत, देहधारी गुरुओं की मत से हम बखूबी वाकिफ हैं। उससे न तो हमारा स्व-कल्याण हुआ और न ही औरों का। हम गिरते ही आये। अब परमात्मा हमें श्रेष्ठ मत दे रहे हैं क्योंकि हमारा कल्याण इसी में है और विश्व का भी। तब तो कहा, स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन। माना कि स्वयं की रीयल्टी से पर्सनैलिटी बनती और उससे रॉयल्टी आती अर्थात् व्यवहारिकता आती। तो इन सबका केन्द्रबिन्दु हमारी रीयल स्मृति, पवित्र वृत्ति ही है। हम इसे सही रूप से समझकर इसका विधिपूर्वक पुरुषार्थ व अभ्यास करते रहें तो ही विश्व परिवर्तक के टाइटल के योग्य बन पायेंगे। तो पुरुषार्थ में सम्पूर्ण पवित्रता को अपनाना ही होगा। अब इससे समझौता करना माना ही अपने आप को धोखा देना। अब समय हमारे परम कर्त्तव्य का इंतज़ार कर रहा है।

मन की एकाग्रता के साथ बुद्धि भी क्लीन और क्लीयर हो

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

दुनिया में अगर वरदान प्राप्त करना होता है तो अपना मस्तक झुकाना पड़ता है, लेकिन वरदान लेने के लिए, वरदान का अनुभव करने के लिए हमारा मन एकाग्र होना चाहिए। अगर मन एकाग्र नहीं है, हलचल में है तो वरदान सुनने में भले बहुत अच्छा लगेगा लेकिन अन्दर उसका फल नहीं मिलेगा। वरदान लिफ्ट का काम करते हैं, मेहनत से मुक्त कर देते हैं। इसमें विशेष अटेन्शन देने की ज़रूरत है।

मन की एकाग्रता के साथ बुद्धि बहुत क्लीन और क्लीयर हो। अगर बुद्धि में ज़रा भी सफाई नहीं है तो वरदान बुद्धि में ग्रहण नहीं हो सकता। भोलानाथ बाबा को राज़ी करने की सहज विधि है, सच्चाई और सफाई। पहले सच्ची दिल से जो भी अपनी कमज़ोरी है उसे महसूस करें। पुरानी कोई भी नेचर व संस्कार है वह सब बाबा के आगे स्पष्ट हो।

अपनी कमी-कमज़ोरी को मिटाने के लिए बाबा को अपना दिलाराम समझकर महसूसता व दृढ़ता से बाबा को सुना दो - बाबा ये मेरी कमज़ोरी है, आप मिटा दो। आप मुझे मदद करो तो मैं करके दिखाऊंगी। बाबा कहता है मैं मदद तो करता हूँ, पर मिटाना तो आपको ही पड़ेगा।

सच्चाई और सफाई से हम बाबा को अपना बना सकते हैं। वो संस्कार जो मोटे-मोटे तो खत्म हो गये हैं लेकिन सूक्ष्म रूप के संस्कार पुरुषार्थ में गैलप नहीं करने देते हैं। जो मैं बुद्धि से करना चाहूँ, बुद्धि और कहाँ भटके नहीं इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थ। नेचर, जिसको हम सूक्ष्म संस्कार कहते हैं, उसे भी अब खत्म करना है।

वरदान में बाबा कोई न कोई शक्ति ही देता है। वरदान में ली हुई शक्तियां हमारे जीवन का आधार होना चाहिए। जिस समय हमको जिस शक्ति की आवश्यकता है, उस समय वो शक्ति काम आये। बाबा ने वरदान दिया है कि सब बच्चे मेरे राज़े बच्चे हो। आप आत्मा मालिक हो इन कर्मेन्द्रियों की। हम राजयोगी हैं अधिकारी भव का वरदान दिया है। वो वरदान जिस समय चाहिए उसी समय काम में आये। मन-बुद्धि संस्कार हमारे कंट्रोल में हों।

अगर कोई पूछे कि भगवान कहाँ रहता है, तो आप फलक से कह सको कि भगवान मेरे दिल में रहता है। उसको और कोई जगह अच्छी ही नहीं लगती। लेकिन अगर आपके मन में रावण की कोई चीज़ है, तो वहाँ बाबा कैसे रहेगा! इसलिए हमारी दिल साफ, पुराने संस्कार से मुक्त होनी चाहिए। तब हम कह सकेंगे कि बाबा से जो वरदान मिला वह स्वरूप में समाया है और समय पर काम में आता है। पेपर अधिकतर उनसे ही आते हैं जिनके साथ कनेक्शन होता है। उस पेपर में हमें पास होना है। और बाबा से वरदान प्राप्त करने के लिए हमें अपनी सूक्ष्म चेकिंग करनी होगी।

किसी को न देख मुझे अपने को देखना और जज करना है

राजयोगिनी दादी जानकी जी

जो कभी किसी को किसी प्रकार से दुःख नहीं देते हैं, उनका चार्ट अच्छा रहता है। मैं हमेशा यही ध्यान रखती हूँ कि मैं किसी को दुःख नहीं दूँ। बाबा कहते चार्ट उसका अच्छा है जिसकी बुद्धि मुरली सुनते बाहर कहीं भी न जाती हो। मुरली की गहराई में भले जायें पर और कहीं बुद्धि न जाये। दूसरी बात दुःख लेना नहीं है। मेरे से ऐसी कोई भूल न हो जो कोई को देखकर आश्चर्य लगे कि देखा यह क्या करती है? अगर मुझे कोई दुःख देने की कोशिश करे, तो भी मैं नहीं लूंगी। कोई पत्थर भी मारे, कई बार मारते हैं, परन्तु फिर भी दुःख नहीं लेंगी, क्योंकि जिस घड़ी दुःख ले लिया, वो अन्दर एक बार चला गया तो फिर वो जायेगा नहीं। फिर एक में दूसरा, दूसरे में तीसरा, तीसरे में चौथा... मेरी जीवन ही दुःखी हो जायेगी।

सारे विश्व भर में जितनी भी आत्मायें हैं, ब्राह्मणों में भी मेरे जैसा सुखी कोई नहीं। यह अन्दर से ईश्वरीय शान है। मेरे को किसी ने कभी दुःखी देखा है? नहीं ना! क्योंकि यह मेरा शान नहीं है। बाहर वाले कोई दुःख देते हैं, टेस्ट लेते हैं, यह भी हमारी स्थिति को मजबूत बनाने के लिए इशारा मिलता है। हिलती तो नहीं है? हलचल हो और हिले तो यह क्या है? अभी तो आगे चलके बहुत हलचल आने वाली है। तो अन्दर यह पक्का हो कि मुझे किसी को कभी दुःख नहीं देना है। अगर थोड़ा भी किसको दुःख दिया तो वह आजकल के हिसाब से बड़ा पाप है, इसलिए दुःख किसी को भी न दो। बाबा का घर है, दाता का दर है। परन्तु कई बार देखते हैं कि कोई हैं जो जानबूझ के किसी को दुःख नहीं देते हैं, लेकिन सामने वाला अपने स्वभाव के वश दुःख ले लेता है।

एक है पुरुषार्थ और सेवा में सफलता, दूसरा है कोई भी बात हार न खिलाये, विजयी बनूँ। हर दिन कोई बात आई होगी, परन्तु बाबा की मदद कहें अथवा अपना स्वयं का ध्यान है, जो बाबा ने कहा जो ओटे सो अर्जुन। तो हमको अर्जुन बनना अच्छा लगता है। किसी को न देख जो मुझे करना है, उसमें लग जाना है, मेरे लिए दूसरा कोई पुरुषार्थ नहीं करेगा। बाबा भी मदद तब करेगा जब मैं सच्चा पुरुषार्थ करूंगी। मैं कोई बहाना दूंगी तो बाबा मेरी केयर नहीं करेगा, क्योंकि बड़े हो गये हैं। अभी भी समझो हम समय की वैल्यू नहीं रखते, व्यर्थ चिंतन में समय गंवाते तो व्यर्थ चिंतन छोड़ेगा नहीं और ही बढ़ेगा। वास्तव में मुझे जिस बात में सोचने की ज़रूरत नहीं है, फिर भी मैं फालतू सोचूँ तो क्या होगा!

ड्रामा का ज्ञान हमें इतना मीठा बनाता है, हर आत्मा का पार्ट अपना है। बाबा हर बात की समझानी देता है, विधि बताता है, तुम बच्चे अपना सोचो। अपना चेहरा तो अच्छा रखो। तुम पहले अपने लिए अपना जज बनो, औरों के लिए नहीं। तो इस प्रकार के जो संकल्प हैं, वो शान्त, शुद्ध, श्रेष्ठ संकल्प पैदा करने में बड़ा समय व्यर्थ गंवाते हैं। तो औरों की बातों में नहीं जाओ। एक बाबा का हूँ, मैं आत्मा हूँ, ड्रामा में हरेक का पार्ट नूँधा हुआ है, हरेक पुरुषार्थ कर रहा है। हो सकता है कोई मेरे से आगे चला जाये तो भले जाये, परन्तु मैं अपने याद की यात्रा में ऐसे रहूँ, बस घर जा रही हूँ, बाबा के सामने बैठी हूँ।

एक मूल शीश को काट दें तो दसों कट जायेंगे

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

एक बाबा की लगन कितनी प्यारी, मीठी,सुखदाई है। ऐसी लगन में मगन रहने वाले कभी किसी दूसरे की लगन में नहीं जायेंगे। अगर किसी की आपस में बहुत-बहुत प्रीत होती है तो उसे तोड़ना मुश्किल होता है। ऐसे जब बाप से हमारी पूरी लगन है, प्रीत है तो यह भी गुप्त खुशी व नशा रहता है कि हमने तो उसी बाप को पाया है। हम उसी प्यार के समुद्र की नदियां हैं। इसी को ही हम कहते हैं निरन्तर योग में रहना, यह मस्ती बड़ी निराली है। बाबा के प्यार का अनुभव करते उसी मस्ती में रहो तो दूसरी कोई भी बात सामने आ नहीं सकती। यह पुरुषार्थ की बहुत सहज विधि है।

कई योग लगाते, मेहनत करते हैं लेकिन अनुभव नहीं होता। कहते हैं मेरा एक बाबा दूसरा न कोई। यही पुरुषार्थ करते हैं कि मैं आत्मा हूँ, मेरा बाबा प्यारा शिवबाबा है, मुझे बाबा की सेवा में तत्पर रहना है। जितना समय बाबा की सेवा में जायें उतना अच्छा है। लेकिन अनुभव हो कि मैं आत्मा इस शरीर से अलग हूँ, मैं आत्मा सुनती हूँ, आत्मा बोलती हूँ, यह मेरा शरीर है। यह अभ्यास कम है। जब हमने कहा- मैं आत्मा आपकी हूँ, तो मेरा सबकुछ आपका है अर्थात् मैं बाबा को ही समर्पित हूँ। आप आत्मा एक बाबा पर समर्पित हो जाओ तो यह जो संकल्प व बुद्धि इधर-उधर भटकती है, वह भी समर्पण हो जायेगी। फिर यह कम्पलेन खत्म हो जायेगी कि क्या करूँ मन भटकता है। विचार शक्ति, बुद्धि की शक्ति को समर्पण कर दो। फिर यह भी नहीं कह सकते कि यह मेरे संस्कार हैं।

कभी किसी ने यह नहीं कहा कि बाबा का संस्कार ऐसा है, बाबा ने भी कभी नहीं कहा कि क्या करूँ मेरा यह संस्कार है तो हमें अगर बाबा के समान बनना है तो संस्कारों के वश होकर के नहीं चलना है। यह संस्कार भी बाबा के हो गये। जैसा बाप वैसी मैं, यही मेरा पुरुषार्थ है। फिर यह जो कहते कि मेरा स्वभाव, मेरे संस्कार- ऐसी अनेक प्रकार की जो माया है वह समाप्त हो जाती है। बाबा भी कहते बच्चे मोहब्बत में रहो तो मेहनत से छूट जायेंगे। जब कोई माया से युद्ध करते हैं तो तरस पड़ता है। रावण के एक-एक शीश को कब तक काटते रहेंगे। एक मूल शीश को ही काट दो तो दसों कट जायेंगे।

बाबा कहते तुम सब हो कठपुतलियां और तुम कठपुतलियों को मैंने दी है श्रीमत की चाबी। तो बाबा ने जो श्रीमत की चाबी दी है उसी अनुसार बेफिक्र बादशाह बन निश्चित हो खेल करो। लेकिन सदा समझो हम राजऋषि, राजयोगी हैं। अपना आक्यूपेशन नहीं भूलो। योगी के लिए मूल चाहिए ज्ञान से पुरानी दुनिया का वैराग्य। हम हैं योगी लोग, न कोई अपना न कोई पराया। हमें कौन जानें।

हे आत्मा तू बाबा के सामने मन-बुद्धि सहित स्वाहा हो जाओ। जब सब स्वाहा हो जायेगा तब पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग्य आयेगा। पुरानी दुनिया तब तक खींचती है जब तक समर्पण नहीं हुए हैं। संकल्प शक्ति भी समर्पण हो तो दूसरी कोई भी बात सामने नहीं आ सकती। इसी का नाम है तपस्या। तो पहले अपने आपका त्याग करो अर्थात् समर्पण हो जाओ। जब आत्मा स्वयं समर्पण हो गई फिर तपस्या करना, अशरीरी बनना बहुत सहज है।

अभी हमारी तपस्या की दुनिया को भी दरकार है। तत्वों को भी इसकी दरकार है। हम सब देख रहे हैं दुनिया की हालत दिन-प्रतिदिन गम्भीर होती जाती है, यह दुनिया की गम्भीर बातें हमें और भी प्रेरणा देती हैं कि हमें तपस्या करके विश्व को अपने साइलेन्स की किरणें देनी हैं।

गीता-भगवान् की वाणी

गीता की यह एक मुख्य विशेषता है कि वह आत्मा और परमात्मा के मिलने के मार्ग का अर्थात् योग का सविस्तार परिचय देती है। गीता में आत्मा को न केवल योग के लिए प्रेरित और उत्साहित किया गया है बल्कि उसमें योग की विधि और योग से प्राप्त होने वाली सिद्धि यहाँ तक कि योग की पूर्ण सिद्धि प्राप्त होने से पहले शरीर छूट जाने पर भी प्राप्ति का बोध कराया गया है और सच्चे योगी के लक्षण क्या हैं, योगी की दृष्टि, वृत्ति, स्मृति और स्थिति क्या होनी चाहिए, उसे किन नियमों का पालन करना चाहिए और कौन-कौन से दैवी गुण धारण करने चाहिए, यह ऐसे मनोरम तरीके से बताया गया है कि इसे बार-बार पढ़ने और सुनने का मन करता है और मनुष्य का मन ऐसी स्थिति प्राप्त करने को लालायित हो उठता है। बिना वायु के स्थान पर जैसे दीप शिखा स्थिर रहती है, वैसे ही मन उस परमपिता परमात्मा की स्मृति में कैसे स्थिर हो और उस अभ्यास के मार्ग में आने वाले विघ्नों को कैसे पार किया जाये, इसका भगवान् ने विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। गीता की त्रिवेणी की यह तीसरी धारा है जो मनुष्य के मन को शीतलता प्रदान करती है और पवित्र बनाती है।

इस प्रकार, गीता न केवल एक दर्शन-ग्रन्थ है बल्कि एक सर्वोत्तम नीति-शास्त्र भी है, एक योग-शास्त्र भी है और जीवन-दर्शन प्रशस्त करने वाली भी है। स्वयं गीता के हरेक अध्याय के अन्त में गीता को एक योग-शास्त्र और उपनिषद भी कहा गया है।

गीता-भगवान् की वाणी

परन्तु इन सब के अतिरिक्त गीता की सर्व प्रमुख विशेषता, जो अन्य किसी में भी नहीं है, वह यह है कि गीता-ज्ञान स्वयं भगवान् ने दिया और इसलिए इसका युक्ति-युक्त नाम 'श्रीमद्भगवद्गीता' है और इसके वक्ता के लिए गीता में 'भगवानुवाच' शब्दों का उल्लेख है। जो स्वयं भगवान् की वाणी हो, वह निश्चय ही 'सत्यं, शिवं और सुन्दरम्' होगी ही और सब शास्त्रों में शिरोमणी भी कहलायेगी ही। यों तो संसार में हरेक धर्म-सम्प्रदाय का अपना-अपना शास्त्र है परन्तु गीता की यह विशेषता है कि वह किसी सम्प्रदाय का प्रतीक न होकर एक सार्वभौम और शाश्वत धर्म का शास्त्र है क्योंकि वह सर्व धर्मों की आत्माओं के परम पिता परमात्मा की वाणी है। यही कारण है कि भारत में सभी धर्म सम्प्रदायों के अनुयायी गीता को मान देते हैं। यहाँ तक कि भारत से बाहर जो धर्म स्थापित हुए, वे भी गीता की महानता को स्वीकार करते हैं। अतः न केवल भारत में ही सभी आचार्यों ने गीता को सर्वोत्तम मान कर इस पर टीका लिखी है बल्कि ईसाई धर्म को मानने वाले कई दार्शनिकों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उदाहरण के तौर पर आल्डॉस हक्सले ने कहा है कि संसार में जितने दर्शन-ग्रन्थ हैं, गीता उनमें सबसे स्पष्ट और सबसे अच्छा सुसंगत आध्यात्मिक विवरण है। गीता के एक शाश्वत धर्म शास्त्र होने के कारण ही इसके अनुवाद देश-विदेश की प्रायः हर मुख्य भाषा में हुए हैं और यह इतनी लोकप्रिय है

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

कि घर-घर में लोग इसका पारायण करते हैं। महात्मा गाँधी ने कहा है कि मुझे भगवद्गीता से ऐसी सांत्वना मिलती है जो बाइबल के सरमन ऑन दि माउंट से नहीं मिलती। वे कहते हैं कि जब जीवन में मुझे निराशा होती है और प्रकाश की कोई किरण नहीं दिखाई देती तब मैं गीता ही की शरण लेता हूँ। स्वयं आद्य शंकराचार्य ने भी कहा है कि गीता सभी वेदों शास्त्रों का सार है और इससे सभी पुरुषार्थ सिद्ध होते हैं। डॉ. राधाकृष्णन् ने गीता पर अपनी टीका में बताया है कि गीता का बुद्ध धर्म की महायान शाखा पर विशेष प्रभाव पड़ा और चीन, जापान तथा जर्मनी में भी इसका विशेष प्रभाव पड़ा।

गीता का महत्व कम होने का कारण

अतः यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि जैसे भारत भगवान् की अवतार भूमि है, जैसे शिवरात्रि महारात्रि है, जैसे माला का मेरु और फूल सर्व प्रमुख हैं, वैसे ही सभी शास्त्रों में गीता स्वयं भगवान् की अमृतवाणी होने के नाते सभी शास्त्रों की जननी है और यह सर्व शास्त्र शिरोमणि है। परन्तु दो भूलें हो जाने के कारण लोगों की दृष्टि में इसकी महानता उतनी नहीं है जितनी होनी चाहिए। एक तो यह कि वास्तव में गीता ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता, देवों के भी देव, सभी आत्माओं के परमप्रिय माता-पिता ज्योर्तिबिन्दु परमात्मा ही की वाणी है जिन्हें कल्याणकारी होने के कारण 'शिव' कहा जाता है और जिनका ही एक गुणवाचक नाम 'कृष्ण' है क्योंकि वे सबके लिए आकर्षणमूर्त हैं और आनन्द के सागर हैं, परन्तु समयान्तर में भ्रान्ति वश लोगों ने उसे विष्णु के साकार रूप श्री कृष्ण की वाणी मान लिया। यदि सभी लोगों को यह मालूम होता कि गीता ज्योति स्वरुप, जन्म-मरण से न्यारे परमपिता परमात्मा की वाणी है तो सभी धर्मों के लोग उसे शिरोधार्य करते और परमात्मा के स्वरुप के बारे में आज इतने मत-मतान्तर न होते।

दूसरी भूल यह हुई कि भगवान् ने काम, क्रोध, लोभादि विकारों के विरुद्ध ज्ञान-बल और योग-बल से होने वाला जो युद्ध सिखाया, उसके स्थान पर समयान्तर में लोगों ने एक हिंसक युद्ध मान, गीता पर हिंसा का दोष लगा दिया। यदि लोगों को यह मालूम होता कि गीता-ज्ञान विकारों से युद्ध कर भारत को स्वर्ग बनाने के लिए दिया गया था और गीता के बाद अहिंसक दैवी सम्प्रदाय और सतयुग की स्थापना हुई थी तो लोग गीता की मत पर चल कर मनुष्य से देवता बनने का पुरुषार्थ करते और यह भारत फिर से स्वर्ग बन जाता। इससे भारतवासियों को यह भी याद रहता कि एक गीता ही हमारा धर्म-शास्त्र है जिसका ज्ञान परमपिता परमात्मा ने ब्रह्मा द्वारा देकर सतयुग की और आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कराई थी।

निष्कर्ष यह है कि गीता सब शास्त्रों की माता है, गीता श्री कृष्ण की भी माता है। ज्योति स्वरुप परमात्मा ही सर्व आत्माओं के परमपिता हैं। उन्हीं परमपिता ने हम सब आत्माओं रुपी वत्सों के कल्याण के लिए गीता-ज्ञान दिया और वर्तमान धर्म-ग्लानि के समय अब वे फिर से गीता-ज्ञान देकर हम सबको कृतार्थ कर रहे हैं। यह आशा करते हुए कि प्रभु-प्रेमी बहनें और भाई अब उस सर्वोत्तम ज्ञान से अपना जीवन श्रेष्ठ बनायेंगे और जीवन में अपना ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करेंगे। हाँ, यह कह दूँ कि विश्व में विकट परिस्थितियाँ आने में अभी थोड़ा ही समय शेष है और हमें चाहिए कि हम इसी बीच के समय में इस ईश्वरीय ज्ञान द्वारा अपने जीवन को सफल बना लें।

मुम्बई-राजभवन। महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम भगत सिंह कोश्यारी राजयोग के प्रचार-प्रसार के लिए ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके को 'ट्रेंडसेटर 2022' पुरस्कार से सम्मानित करते हुए। साथ हैं सुप्रसिद्ध पार्श्वगायक कुमार सानू।

ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। नगर निगम सीमा क्षेत्र में आमजनों को स्वच्छता के प्रति जागरुक करने तथा स्वच्छता में सहभागिता हेतु नगर पालिका निगम ग्वालियर द्वारा स्वच्छता सर्वेक्षण 2022 के तहत वार्ड 50 से स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन एवं वॉर्ड 57 से ब्र.कु. प्रहलाद भाई तथा ब्र.कु. डॉ. गुरचरण भाई को पूरे नगर निगम सीमा क्षेत्र में स्वच्छता ब्रांड एम्बेसडर मनोनीत किया गया। अटल सभागार जीवाजी विश्व विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में संभागीय आयुक्त और प्रशासक आशीष सक्सेना, नगर निगम आयुक्त किशोर कन्याल एवं अपर आयुक्त ने ब्र.कु. आदर्श बहन एवं ब्र.कु. प्रहलाद को प्रमाण पत्र प्रदान किया। इस मौके पर वार्ड मॉनिटर, स्वच्छता प्रभारी, ज़ोनल ऑफीसर सहित शहर के अन्य जनप्रतिनिधि एवं ब्रांड एम्बेसडर उपस्थित रहे।

राजकोट-रणछोड़ नगर(गुज.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' प्रोजेक्ट के अंतर्गत 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में केक काटते हुए गुजरात ज़ोन की डायरेक्टर राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, मांडवरायजी मंडली के मैनेजर जगदीश भाई चोवटिया, पी.डब्ल्यू.डी. की सीनियर क्लर्क जयश्री बहन मेहता, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शीतल बहन, ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. रमा बहन तथा अन्य।

भादरा-राज.। स्वामी नर्सिंग होम हॉस्पिटल में आध्यात्मिक प्रवचन देने के पश्चात् एमडी डॉ. सुरेश स्वामी व एमबीबीएस डॉ. ललिता स्वामी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. चंद्रकांता बहन। साथ हैं ब्र.कु. भगवती बहन तथा हॉस्पिटल स्टाफ।

भीनमाल-राज.। जालोर महोत्सव 2022 में ब्रह्माकुमारीज़ के भीनमाल राजयोग सेवाकेन्द्र की झाँकी को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। स्थानीय विकास भवन में आयोजित भव्य कार्यक्रम में ब्र.कु. गीता बहन को सर्टिफिकेट और ट्रॉफी देते हुए एसडीएम जवाहराराम चौधरी, डीवाईएसपी सीमा चोपड़ा, कार्यक्रम प्रभारी संदीप देवासी, नगर पालिका ई.ओ. आशुतोष आचार्य तथा अन्य गणमान्य लोग।

नई दिल्ली-करोल बाग(पाण्डव भवन)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत 'सशक्त मन से खेलेगा इंडिया तो जीतेगा इंडिया' विषयक कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा बहन,डायरेक्टर,करोल बाग सेवाकेन्द्र, राजकुमार जी,किशनगंज रेलवे रेसलिंग एकेडमी के मैनेजर,ध्यानचंद अवॉर्डी, ब्र.कु. विजय बहन,स्पोर्ट्स विंग मेम्बर, ब्र.कु. ज्योति भाई,पैरा स्पोर्ट्स के ज्वाइंट सेक्रेट्री, सोहन लाल अटल,एनआईएस कोच ऑफ मार्शल आर्ट्स, डॉ. विनीत मेहता,डायरेक्टर ऑफ फिज़िकल एजुकेशन,श्री राम कॉलेज ऑफ स्पोर्ट्स, सुनीता खुराना,रॉक बॉल गेम की वाइस प्रेसीडेंट, निर्भय कुमार,एथलेटिक कोच इंडिया नेवी स्पोर्ट्स तथा अन्य।

दिल्ली-इंद्रपुरी। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न चैतन्य झाँकियों के आयोजन सहित तीन हज़ार दो सौ किलो बर्फ के विशाल शिवलिंग का भी निर्माण किया गया।

धूरी-पंजाब। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए ब्र.कु. मूर्ति बहन, बरनाला सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ब्रिज बहन, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. सुदर्शन बहन, ब्र.कु. सुशीला बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन तथा अन्य। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में सेवानिवृत्त डीपीआरओ मनजीत सिंह बख्शी, कैम्ब्रिज स्कूल की वाइस प्रिन्सीपल मिनाक्षी सक्सेना, एडवोकेट जसवीर रतन, तरसेम मित्तल, मदन लाल बंसल, परवीन गुप्ता, मदन वर्मा, मनवीर सिंह, अशोक कुमार, सुशील कुमार सहित अन्य गणमान्य लोग शामिल रहे।

फाज़िल्का-पंजाब। त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर शिव ध्वज के नीचे प्रतिज्ञा करते हुए मुख्य अतिथि संत जगदीश मुनी, हनुमान मंदिर के प्रधान देवेन्दर सचदेवा, वरिष्ठ पत्रकार लीलाधर शर्मा, राकेश नागपाल, ब्र.कु. प्रिया बहन, ब्र.कु. शालिनी बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

कलान-शाहजहाँपुर(उ.प्र.)। माघ मेला रामनगरिया में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'महिला सशक्तिकरण, संत सम्मेलन एवं किसान सशक्तिकरण' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम अध्यक्षा ब्र.कु. सरोज बहन, क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. करुणा बहन, संचालिका ब्र.कु. रीना बहन, मुख्य अतिथि कलान ब्लॉक प्रमुख रामगोपाल वर्मा तथा अन्य गणमान्य अतिथियों सहित बड़ी संख्या में भाई-बहनें उपस्थित रहे।

ज्ञानसरोवर-मा.आबू। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर शिव ध्वजारोहण करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी,अति.मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़, राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी,संयुक्त मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. करुणा भाई,मल्टीमीडिया चीफ,ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिड्ढा, निदेशक, ग्लोबल हॉस्पिटल,मा.आबू, राजयोगी ब्र.कु. सूर्य भाई, ब्र.कु. हंसा बहन तथा अन्य वरिष्ठ ब्र.कु. भाई-बहनें।

प्युरिटी का फाउंडेशन हो मजबूत

गतांक से आगे...

प्युरिटी की पर्सनैलिटी में जो मैं सोच रही थी कि उसमें कौन-सी बात को अगर विशेष लिया जाये तो जैसे दुनिया में लोग बाह्यता में आते हैं, बाबा हमें आंतरिक ले जाते हैं, उसकी गहराई में ले जाते हैं कि उसका चलन कैसा होगा, दूसरा उसका व्यवहार कैसा होगा।

पर्सनैलिटी में ये चारों बातें काउंट होती हैं - एक उनकी सोच कैसी होगी, दूसरा उनका चेहरा कैसा होगा, तीसरा व्यवहार कैसा होगा और चलन कैसी होगी। प्युरिटी के पर्सनैलिटी वालों की। तो जब हम कहते हैं कि उसकी सोच कैसी होगी यानी दूसरे शब्द में हम कहें कि उसका मन कैसा होगा! प्युरिटी की पर्सनैलिटी वाले का मन कैसा होगा। शुभ भावना, शुभ कामना उसके अन्दर इतनी भरी होगी। हर आत्मा के प्रति प्रेम प्रवाहित, निर्मल प्रेम जिसको कहा जाये पवित्र प्रेम, कोई अपेक्षा नहीं जिसमें। तभी तो शुभ भावना, शुभ कामना भी प्रवाहित हो सकती है। जब हर आत्मा को हम आत्मिक भाव से देखते हैं तभी वो निर्मल प्रेम, वो शुभ भावना, शुभ कामना और वो सोच के अन्दर इतनी शुद्धता, सकारात्मकता बनी रहेगी। क्योंकि सकारात्मकता भी प्युरिटी के आधार से आती है। अगर अन्दर प्युरिटी ही न हो, एक बार बाबा ने कहा था कि बच्चे व्यर्थ संकल्प आना ये भी एक इम्प्यूरिटी है। तो कितना शुद्ध और सकारात्मक संकल्प मन के अन्दर उत्पन्न होता हो, इतना खज़ाना हो। सकारात्मकता का, पॉज़िटिव एनर्जी का। जब पॉज़िटिव एनर्जी से मन भरा होगा तब उस मन के अन्दर से हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना निर्मल प्रेम की सरिता स्वतः ही बहने लगती है, जहाँ कोई अपेक्षा नहीं, जहाँ कोई प्रकार की चाहना न हो, जहाँ

ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

कोई प्रकार का भय न हो। लेकिन जिसको बाबा ने बहुत सुन्दर शब्द ज्ञान मार्ग में दिया हम बच्चों को, बेहद। बेहद की फीलिंग। ये मेरे अपने हैं, ये मेरे अपने नहीं हैं। ये मेरे-तेरे का भाव उसमें नहीं आता है। मन के संकल्पों में जहाँ मैं और मेरापन ही न हो वहीं वो शुद्धता बनी रहती है। वो निर्मल पवित्र प्यार बना रहता है। और इतनी सकारात्मक ऊर्जा होगी और यही सकारात्मक ऊर्जा हमें कॉन्फिडेंस देती है।

आज व्यक्ति का कॉन्फिडेंस कब खत्म होता है जब निगेटिविटी होती है, अन्दर झूठ होता है। अगर अन्दर सच्चाई है तो कॉन्फिडेंस अपने आप होता है लेकिन अन्दर में अगर सच्चाई नहीं है तो कॉन्फिडेंस को ब्रेक करता है। झूठ बोलने के बाद भी कॉन्फिडेंस बना रहे ये बहुत बड़ी बात है। कई बार कई लोग हमें कहते हैं कि आप हमारे लिए इतना झूठ बोल देंगे? मैं ये कहती कि कितना पैसा मिलेगा उसका? क्यों, क्योंकि एक बार झूठ बोलना माना मुझे जीवन भर वो याद रखना पड़ेगा कि कहीं उस झूठ के विरोधाभास में मैं न जाऊं। नहीं तो लोग क्या बोलेंगे कि पिछली बार तो आपने ऐसा बोला था और अब ऐसा बोला।

तो मुझे ज़िंदगी भर पहली बार जो झूठ बोला वो याद रखना पड़ेगा। ताकि मैं खुद को उस वाक्य से खुद को खंडन न करूँ। नहीं तो कितनों का विश्वास हम तोड़ देंगे। बाबा ने कितना सरल उपाय हमें बताया कि बच्चे सच्चाई-सफाई रखो। सच बोलो ताकि ज़िंदगी में कभी याद ही न रखना पड़े। जो बात जैसी है वैसी बोल दो तो फ्री हो गए ना! चेहरा सदा प्रसन्न रहेगा। अगर हमने दस लोगों के सामने झूठ बोला तो हमारा योग लगेगा क्या? कभी नहीं लग सकता। इसीलिए बाबा ने हमें इतना सहजता से कह दिया कि बच्चे, सच्चे दिल पर साहेब राज़ी। भगवान को भी राज़ी करने का यही तरीका है। अगर सच बोल देने से उस समय थोड़ा कुछ हुआ भी बाद में जैसे ही पता चलेगा तो होगा कि हाँ मेरे सामने सच बोला तो कम से कम उस व्यक्ति का विश्वास तो नहीं टूटेगा, ये भी प्युरिटी है।

- क्रमशः

इंदौर-ज्ञानशिखर(म.प्र.)। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम 'सर्व धर्म समागम' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए इस्कॉन मंदिर के प्रेसिडेंट स्वामी महामन दास जी, ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. हेमलता दीदी, कैथोलिक चर्च के प्रमुख फादर बिशप चाको, गुरुसिंह सभा के अध्यक्ष मंजीत सिंह भाटिया, पूर्व महापौर डॉ. उमाशशि शर्मा, ब्र.कु. जयंती बहन, ब्र.कु. शशि बहन, ब्र.कु. कुसुम बहन, ब्र.कु. अम्बिका बहन, ब्र.कु. अनिता बहन, ब्र.कु. उषा बहन तथा शहर के अन्य गणमान्य लोग।

अम्बिकापुर-छ.ग.। स्वास्थ्य एवं समाज कल्याण विभाग राज्यमंत्री टी.एस. सिंह देव को उनके निवास स्थान पर ज्ञानचर्चा तथा गुलदस्ता एवं ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् शिवरात्रि कार्यक्रम का ईश्वरीय निमंत्रण देते हुए सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी व ब्र.कु. ममता बहन।

वाराणसी-उ.प्र.। रण विजय सिंह, एडीएम, एडमिनिस्ट्रेशन, वाराणसी को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरोज बहन। प्रो. कमलेश तिवारी, रमेश सिंह तथा अन्य गणमान्य लोग भी इस मौके पर उपस्थित रहे।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या
बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NO: - 30826907041
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH:- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya,Shantivan
Note:- AfterTransfer send detail on E-Mail -omshanti-media.acct@bkivv.org or
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087

तीव्र पुरुषार्थ के लिए खुद बनाएं अपनी गाइड लाइन्स

राजयोगिनी गीता दीदी,व्यापार और उद्योग प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका

जब से हम सभी बाबा के बच्चों को सत्य ज्ञान और योग की सही विधि बाबा ने बताई है तब से हम सभी पुरुषार्थी बन ही गये हैं। बाबा ने सदा हमें समय का सिग्नल बताया है क्योंकि हमारे जीवन में समय का परिबल एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण परिबल है। वर्तमान समय जो हमारे लिए विशेष अपनी स्थिति बनाने के लिए है और विशेष प्राप्तियां, अनुभूतियां कर लेने के लिए है। लगातार लगभग 50 वर्षों से अव्यक्त बाबा की पालना हम सब लेते रहे हैं। लेटेस्ट समय अनुसार हमें क्या करना है, किन बातों पर ध्यान देना है, कहाँ हमें आगे बढ़ना है, कहाँ हम रूक गये हैं, कहाँ हम अटक गये हैं ये सारी बातें बाबा हमें बताते रहे हैं। हमें कोई विशेष चिंतन करने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। क्योंकि प्रतिवर्ष बापदादा की मिलन की सीज़न में बाबा दस-बारह मुरलियां चलाते रहे और हमें पूरे वर्ष के लिए होमवर्क देते रहे। हमें उसको सिर्फ फॉलो करना था। और हमारी प्यारी दादियां जो हमें प्रैक्टिकल आदर्श बनकर अपने तपस्वी जीवन से हमें सदा प्रेरणा देते रहे, प्यार देते रहे, उमंग-उत्साह बढ़ाते रहे।

अब आप देखिए कि 2017 के 31दिसम्बर के साथ प्यारे बापदादा का पार्ट पूरा हो गया। सम्पन्न हो गया। लेकिन अब हमें खुद, खुद के लिए गाइड लाइन बनानी है और अपने आपको आगे बढ़ाना है। पिछले दो साल में हमारी अधिकतर दादियां एडवांस पार्टी में चलीं गईं। अब सिर्फ एक दादी हमारे बीच में है जिसको एग्ज़ाम्पल के रूप में बाबा ने रखा है कि इस दुनिया में, इस शरीर में रहते हुए कैसे हमें न्यारा और अपनी उपराम स्थिति में रहना है। तो ये जो समय है वो है खुद जागने का, खुद ठानने का, खुद वो धुन लगाने का, तभी हम अपने आप को जो बाकी रहा है वो करके अपने को सम्पन्न बनाने का है। जैसे फाइनल एग्ज़ाम होती है तो टीचर का पार्ट पूरा हो जाता है। फाइनल एग्ज़ाम के पहले वो थोड़ा समय होता है जब स्टूडेंट पूरा कोर्स रिवाइज़ करता है और जो डिफिकल्ट सब्जेक्ट है उसके लिए, जिसमें वो कमज़ोर हैं उस पर गौर करते हैं, तो ये समय वो चल रहा है। इसीलिए हमें स्वयं के प्रति अंतर्मुख बनकर, अपने लक्ष्य के प्रति फोकस होकर खुद ही खुद के लिए तैयारी करनी है।

समय तो हम बाबा को दे ही रहे हैं, समय कोई जास्ती हमें निकलने वाला नहीं है क्योंकि हमारी जवाबदारियां भी हैं और कर्त्तव्य भी हैं। पर हमें अपने पुरुषार्थ को क्वालिटी वाला बनाना है साधारण नहीं, ढीला-ढीला नहीं लेकिन दिल की सच्ची लगन से हमें तीव्र पुरुषार्थ करना है।

अब ये देखने का समय नहीं है कि कौन क्या कर रहा है, ये समय है मुझे क्या करना है। बाबा ने क्या कहा है और हमें क्या करना है। उसपर फोकस हो जाने का ये समय है। इसीलिए हमें औरों के तरफ नज़र नहीं रखनी है। बहुत वैरायटी सीन्स हमें देखने में आयेंगे। हर आत्मा का वैरायटी पार्ट है, हर आत्मा की अपनी लगन है, हर आत्मा का अपना चिंतन है, अपनी उनकी रूचि है इसीलिए पुरुषार्थ में हरेक वैरायटी नज़र आयेंगे। पर जिनको मंज़िल पर पहुंचना है उनको साइड सीन्स नहीं देखने। उनको अपने लक्ष्य को देखना है कि मंज़िल अभी भी मेरे लिए कितनी दूर है, समय की मार्जिन कितनी है और मेरी रफ्तार क्या है। मेरी स्पीड कैसी है, तो मंज़िल की दूरी देखते हुए और समय की मार्जिन को देखते हुए हमें अपनी रफ्तार को तीव्र बनाना है और तीव्र बनाना माना क्या? समय तो हम बाबा को दे ही रहे हैं, समय कोई जास्ती हमें निकलने वाला नहीं है क्योंकि हमारी जवाबदारियां भी हैं और कर्त्तव्य भी हैं। पर हमें अपने पुरुषार्थ को क्वालिटी वाला बनाना है साधारण नहीं, ढीला-ढीला नहीं लेकिन दिल की सच्ची लगन से हमें तीव्र पुरुषार्थ करना है।

बाबा ने भी कहा है कि लास्ट में आने वाले बच्चे भी अगर अपना समय और संकल्प वेस्ट नहीं करेंगे तो वो लास्ट सो फास्ट जा सकते हैं। एक बात और मैं बताना चाहूँगी कि जैसे स्पीड से हमें जाना है, ट्रैवल करना है, कार से जाना है तो दो चीज़, एक तो हमें हाईवे को पकड़ना चाहिए। अगर हम इधर-उधर, उबड़-खाबड़ रास्ते को पकड़ेंगे तो आप नहीं जा सकते हैं। आपको हाईवे एक्सप्रेस वे को पकड़ना है। तो हमें भी, हमारे लिए हाईवे कौन हैं हमारी दादियां हैं। जो हमारे बाबा-मम्मा हैं हमें बस उनको फॉलो करना है। दूसरों को देखेंगे तो आप स्पीड से नहीं जा सकेंगे। दादियां हमारे लिए रोल मॉडल हैं। और दूसरी बात अगर अच्छा व्हीकल होगा, क्वालिटी व्हीकल होगा तो आप स्पीड से जा सकेंगे। तो हमें भी बुद्धि में बहुत गहरा ज्ञान रखना है। क्वालिटी ब्राह्मण जीवन बनाना है तो हम बाबा-मम्मा को फॉलो कर सकेंगे। बड़ों को, दादियों को हम फॉलो कर सकेंगे। और हम अपने आप को भी सम्पन्न बना सकेंगे। और बाबा ने जो विश्व कल्याण का कार्य हमें दिया है, हम सब मिलकर उनको सम्पन्न कर सकेंगे।

शिमला-पंथाघाटी(हि.प्र.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' कार्यक्रम का उद्घाटन तथा महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में राज्यपाल महोदय राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर, ब्र.कु. रजनी बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन, पूर्व विधायक ब्र.कु. हृदय राम तथा अन्य भाई-बहनें। इस अवसर पर राज्यपाल ने सेवाकेन्द्र के परिसर में बनाए जाने वाले पार्क का उद्घाटन कर एक सेब का पौधारोपण किया।

जयपुर-सोडाला(राज.)। महाशिवरात्रि पर्व पर आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित बाइक रैली के साथ ब्रह्माकुमारी बहनों का स्वागत करते हुए पूर्व मंत्री एवं विधायक कालीचरण सराफ, पार्षद कविता कटियार तथा भाजपा महिला मोर्चा अध्यक्ष गीता बहन।

शहेरा-गुज.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' परियोजना के अंतर्गत शिव जयंती महोत्सव में शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य समझाते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेखा दीदी,संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़ पंचमहाल,दाहोद,महीसागर जिला गोधरा। साथ हैं जेठाभाई भरवाड़,उपाध्यक्ष श्री गुजरात विधानसभा एवं धारा सभ्य श्री शहेरा, उर्मिला नायका,प्रमुख श्री नगर सेवा सदन शहेरा, एन.आर. चौधरी,पी.आई. श्री तालुका पुलिस स्टेशन शहेरा, हीमतसिंह बारिया,उपप्रमुख श्री नगर सेवा सदन शहेरा, डॉ. कमलेश परमार,बी.आर.सी. शिक्षण विभाग शहेरा, मंगल बारिया,भाजपा प्रमुख शहेरा तथा ब्र.कु. रतन बहन,संचालिका ब्रह्माकुमारीज़ शहेरा।

नवापारा-राजिम(छ.ग.)। माघी शिवरात्रि मेला के उद्घाटन अवसर पर मंचासीन हैं चरन दास महंत,अध्यक्ष,छ.ग. विधानसभा, ताम्रध्वज साहू, राज्यमंत्री,गृह,जेल,लोक निर्माण,पर्यटन,धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, कवासी लखमा,वाणिज्य कर मंत्री, धनराज जी,अध्यक्ष,नगर पालिका, ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. पुष्पा बहन तथा अन्य गणमान्य लोग।

राजगढ़-इंगले कॉलोनी(म.प्र.)। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की जिला संचालिका ब्र.कु. मधु बहन, भूअभिलेख अधीक्षक संजीव चौरसिया, नगर पालिका सीएमओ पवन अवस्थी, हिंदू उत्सव समिति के अध्यक्ष बृजेन्द्र सरावत, रूद्रेश्वर महाकाल समिति के अध्यक्ष सुनील टेलर, हेड पोस्ट मास्टर सीमा दुबे, केन्द्रीय विद्यालय के प्राचार्य नंदकिशोर सोनी, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, ब्र.कु. नम्रता बहन, ब्र.कु. नीलम बहन तथा अरविंद सक्सेना।

लहरपुर-सीतापुर(उ.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए ब्लॉक प्रमुख उमाशंकर वर्मा, ब्र.कु. योगेश्वरी बहन, ब्र.कु. रेनू बहन, ब्र.कु. रश्मि बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

तखतपुर-छ.ग.। मेले में आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए विधायक रश्मि सिंह, कांग्रेस सचिव अध्यक्ष आशीष सिंह, सचिव गरीबा यादव, ब्र.कु. ममता बहन तथा ब्र.कु. निकिता बहन।

दिल्ली-मजलिस पार्क। 86वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ए.एस.पी. दिनेश, गुरुद्वारे के चीफ सुरेन्द्र सिंह भाटिया, इंद्रा नगर गुरुद्वारे से सरदार बलवंत सिंह, मोती मस्जिद से मुफ़्ती मोहम्मद, निगम पार्षद गरिमा गुप्ता, भाजपा युवा नेता अरुण गुप्ता, ब्र.कु. राजकुमारी दीदी, ब्र.कु. शारदा बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

उदयपुर-मोती मगरी(राज.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीटा दीदी, दिल्ली गेट गुरुद्वारा के ज्ञानी जी, वाइस चांसलर उमाशंकर जी, पंडित रावत जी तथा बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे। सभी ने शिव ध्वजारोहण कर अपने जीवन को शुद्ध पवित्र बनाने की प्रतिज्ञा की।

सुन्नी-शिमला(हि.प्र.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' तथा 'महाशिवरात्रि' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में तहसीलदार सुनील चौहान, एस.एच.ओ. कर्म चंद ठाकुर, वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. रेवादास, ब्र.कु. शकुंतला बहन तथा अन्य विशिष्ट लोगों सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

बहादुरगढ़ से.2-हरियाणा। सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् युद्धवीर जी,चेयरमैन,हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष चेयरमैन एसोसिएशन को ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. विनीता बहन, ब्र.कु. रूबी, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. कोमल तथा अन्य।

लौंग से बनाएं अपने बालों को जड़ों से हेल्दी

लौंग का एंटीबैक्टीरियल और एंटीफंगल गुण बालों में इंफेक्शन को रोकता है और बालों को जड़ों से हेल्दी बनाता है। बालों की देखभाल करना आसान काम नहीं है पर इन्हें नज़रअंदाज़ करना बालों की समस्याओं को बढ़ा सकता है। जैसे कि मौसम में बदलाव के साथ बालों में डैंड्रफ, बालों का झड़ना और सफेद बाल। ऐसे में इन तमाम समस्याओं से बचाव का एक तरीका ये है कि आप पहले ही अपने बालों का खास ध्यान रखें। अक्सर लोग बालों का खास ध्यान रखने के लिए महंगे-महंगे प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करते हैं। जैसे कि शैंपू, कंडीशनर, हेयर ऑयल और हेयर सीरम। लेकिन इन प्रोडक्ट्स के जितने फायदे नहीं होते उससे ज़्यादा इसके नुकसान होते हैं। ऐसे में आपको कुछ नैचुरल चीज़ों का इस्तेमाल करना चाहिए जो कि बालों को फायदा ना पहुंचाए तो उनको भी नुकसान पहुंचाने का भी काम न करें। लौंग एक ऐसी ही नैचुरल चीज़ है जो कि आपके बालों को हेल्दी रखने और इसकी कई समस्याओं को दूर करने में आपकी मदद कर सकती है। तो आइए, हम आपको बताते हैं कि बालों के लिए लौंग के इस्तेमाल का तरीका और इसके कुछ खास फायदे।

बालों के लिए लौंग के फायदे

डैंड्रफ से छुटकारा पाने के लिए

डैंड्रफ यानी कि रूसी हर किसी को परेशान करता है। चाहे ये मौसम बदलने के कारण या फिर बालों के देखभाल से जुड़ी लापरवाहियों के कारण हो। आप बालों से डैंड्रफ को कम करने के लिए लौंग का इस्तेमाल कर सकते हैं। दरअसल, लौंग का पानी आपको इस काम में मदद कर सकता है। लौंग के पानी में एंटीबैक्टीरियल गुण होता है जो कि बालों की क्लीज़िंग करने के साथ डैंड्रफ को कम करने में मदद करता है। इसके अलावा ये बालों में खुजली की समस्या को व हमेशा के लिए डैंड्रफ से छुटकारा पाने में मदद करता है। इसके लिए लौंग को पानी में डालकर उबाल लें और अब इस पानी को अपने स्कैल्प के लिए व डैंड्रफ के लिए इस्तेमाल करें।

स्कैल्प इंफेक्शन दूर करने के लिए

स्कैल्प इंफेक्शन दूर करने के लिए आपको लौंग के तेल से अपने स्कैल्प की मालिश करनी चाहिए। इसमें एंटीमाइक्रोबायल और एंटीफंगल गुण होते हैं, इसलिए यह आपकी स्कैल्प को क्लीन करने में मदद करता है। लौंग के तेल में मौजूद रासायनिक यूजेनॉल भी एक उत्कृष्ट एंटीसेप्टिक है जो किसी भी चकत्ते को ठीक करता है। वे स्कैल्प की बीमारियों जैसे कि डर्मेटाइटिस और स्कैल्प प्रूरिट्स आदि से भी लड़ते हैं। इसके लिए एक कटोरी नारियल का तेल लें और इसमें लौंग मिलाएं। अब इसे उबाल लें और अपने बालों में लगा लें।

लंबे बालों के लिए लौंग से बनाएं हेयर पैक

आप लौंग से हेयर पैक बनाकर अपने बालों के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। दरअसल, लौंग को पीसकर और एलोवेरा मिलाकर हेयर पैक बना सकते हैं। ये बालों को जड़ों से पोषण देता है और बालों की रोम में ऑक्सीजन की आपूर्ति सुरक्षित रखता है जिससे बाल बढ़ाने में मदद मिलती है।

सफेद बालों के लिए लौंग का लेप

सफेद बालों के लिए लौंग का लेप बहुत फायदेमंद है। बालों को फिर से जीवंत करने के लिए आप लौंग का लेप बनाकर अपने बालों में लगा सकते हैं। इसके लिए लौंग के तेल के एक भाग को तीन भाग आर्गेनिक यूकेलिप्टस तेल में मिलाकर एक मिश्रण बना लें। अब इसमें थोड़ी-सी फिटकरी पीस कर मिलाएं। फिर सप्ताह में कम से कम दो बार अपने बालों की स्कैल्प को इससे मालिश करें। इससे ब्लड सर्कुलेशन सही होगा और बालों को काला करने में मदद मिलेगी। बालों के लिए लौंग का तेल एक प्राकृतिक उपचार के रूप में काम करता है। ये बालों के विकास को बढ़ावा देता है। इसके अलावा रेगुलर लौंग का तेल इस्तेमाल करने से ब्लड सर्कुलेशन सही हो जाता है और बाल जड़ों से हेल्दी रहते हैं।

नोएडा से.26-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं बायें से प्रिया रावत,संयुक्त सचिव,द्वालगिरी सोसाइटी, के.पी. सिंह,सेवानिवृत्त डीडीजी,मंत्रालय लाइट हाउस और लाइट शिप विभाग, संजीव दुग्गल,आर.डब्ल्यू.ए. समिति सदस्य, मदन सिंह चौहान,विधायक,गढ़ मुक्तेश्वर एवं पूर्व राज्य मंत्री समाजवादी पार्टी, ब्र.कु. राधा बहन, ब्र.कु. सुदेश बहन, श्वेता सेठी,मनोज सेठी की धर्मपत्नी, मनोज सेठी,आईसीएएस संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार,युवा मामले और खेल मंत्रालय, अशोक कुमार मिश्रा,महासचिव,द्वालगिरी सोसाइटी एवं निदेशक,शिशु मंडल,भाजपा तथा एम.एस. रावत,निदेशक,द्वालगिरी सोसाइटी।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सोनई गांव में शोभायात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् थोककमल में ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला में शिव ध्वजारोहण किया गया। इस मौके पर इगलास सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हेमलता बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शान्ता बहन, सोनई के थानाध्यक्ष विनय कुमार, ग्राम प्रधान सतीश कुमार, ब्र.कु. दुर्गेश बहन, ब्र.कु. कोमल बहन, ब्र.कु. श्वेता बहन, ब्र.कु. नीतू बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित बड़ी संख्या में ग्राम वासी उपस्थित रहे।

राजकोट-पंचशील(गुज.)। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर बर्फिला अमरनाथ एवं 86 भोग का श्रृंगार किया गया तथा विश्व शांति के लिए शांति का दान दिया गया। इस अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी,क्षेत्रीय निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़ तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित बड़ी संख्या में शहर के लोग उपस्थित रहे।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। इंडिया सीमेंट लिमिटेड कंपनी,बांसवाड़ा में 'स्व प्रबंधन कला व सुखद एवं सुरक्षित जीवन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में प्लांट हेड यतेन्द्र शाह, चीफ मैनेजर ए.के. पांडे, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. अनिता दीदी, ब्र.कु. सविता बहन तथा अन्य स्टाफ।

विजयवाड़ा-आ.प्र.। एसआरएम युनिवर्सिटी, अमरावती, आ.प्र. तथा ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग के मध्य एसआरएम युनिवर्सिटी में एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर हुए। इस मौके पर प्रो. विज्जा सम्बासिवा राव,वाइस चांसलर, डॉ. आर. प्रेम कुमार,रजिस्ट्रार, डॉ. नाग स्वेता पसुपुलेती, डायरेक्टर, इंटरनेशनल रिलेशन्स एंड हाइयर स्टडीज़, ब्र.कु. डॉ. पाण्ड्यामणि भाई,डायरेक्टर,वैल्यु एजुकेशन प्रोग्राम, ब्र.कु. जय कुमार,मा.आबू, ब्र.कु. पद्मजा, कोऑर्डिनेटर, आ.प्र. एजुकेशन विंग तथा ब्र.कु. सिरिशा उपस्थित रहे।

कादमा-झोझूकलां(हरियाणा)। जनता महाविद्यालय द्वारा गांव आदमपुर डाढी के बालानाथ योगा आश्रम में स्वयं सेवकों के लिए चल रहे राष्ट्रीय सेवा योजना के साप्ताहिक शिविर में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. वसुधा बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, पोस्ट मास्टर ब्र.कु. अशोक शर्मा, कार्यक्रम अधिकारी प्रो. रोशन लाल व सुरेन्द्र सिंह, योगाश्रम संचालक देवी सिंह तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

जयपुर-सोडाला(राज.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत शिवरात्रि कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण करते हुए ब्र.कु. पूनम दीदी,उपक्षेत्रीय निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. स्नेह बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, अजय महाला,एडिशनल कमिश्नर ऑफ इनकम टैक्स, विजय कटियार, डायरेक्टर ऑफ इंटरनेशनल हिंदुस्तान एकेडमी तथा अन्य।

शांतिवन-आबू रोड। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में शिव ध्वजारोहण के अवसर पर उपस्थित हैं राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई,महासचिव,ब्रह्माकुमारीज़, राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई,अति.सचिव,ब्रह्माकुमारीज़, राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी,अति.मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़, राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी,संयुक्त मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़, राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय भाई,कार्यकारी सचिव,ब्रह्माकुमारीज़ तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

नीमच-म.प्र.। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सविता दीदी, विधायक, ग्रुप सेंटर के डी.आई.जी., सी.एस.पी. सहित वरिष्ठ भाजपा नेता संतोष चोपड़ा, पत्रकार सुरेन्द्र सेठी, अनिल चौरसिया, आदित्य मालू, विनीत पाटनी, डॉ. विपुल गर्ग, सुरेश चेलावत, सीआरपीएफ महिला संगठन कावा की अध्यक्षा श्रीमति संतोष रावत, माधुरी चौरसिया, ब्र.कु. श्रुति बहन, ब्र.कु. सुरेन्द्र भाई तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

हम आदत को चला रहे हैं या आदत हमें

पहली बार मैंने किसी ओर के बारे में निंदा की। ये आलोचना का पहला चिन्ह था। मुझे उस व्यक्ति से परेशानी, असुविधा तो थी ही, साथ ही बहुतों को भी उससे परेशानी हो रही थी। मुझे आस-पास के लोगों ने कहा कि ये तो स्वाभाविक है, मुझे तो ये आदमी पसंद ही नहीं है, ये तो है ही ऐसा। तो हमने उस परेशानी, असुविधा को स्वाभाविक कह दिया। जैसे आपने कहा कि गाड़ी का दरवाज़ा थोड़ा-सा आवाज़ कर रहा था। अगर उसको हमने सहज स्वीकार कर लिया कि गाड़ी का इतना आवाज़ करना तो स्वाभाविक है तो हमने उसको ठीक नहीं किया, हम उसके साथ चलते रहे। लेकिन धीरे-धीरे वो जो असुविधा है वो बढ़ती जायेगी। तो शुरु हुआ होगा पहली बार गुस्सा, पहली बार चिंता, पहली बार डर, बेचैनी, हमने उसका कुछ नहीं किया। वो धीरे-धीरे बढ़ता गया। आज हमने टेन्शन(चिंता) शब्द को छोड़ दिया, हमने कहा स्ट्रेस(तनाव), मैं बहुत तनाव में हूँ, तनाव के साथ भी चलते रहे, क्योंकि समाज ने कहा तनाव स्वाभाविक है। जब ये हुआ और तनाव के स्तर पर भी हमने ठीक नहीं किया तो आज हम कहते हैं, मैं आज खुद को डिप्रेशन(उदासी, अवसाद) में महसूस कर रहा हूँ। पहले था आज मैं चिंतित हूँ, फिर हुआ आज मैं तनाव में हूँ, तो असुविधा, बेचैनी धीरे-धीरे क्या होती गयी, बढ़ती गयी। आज जब हम इतने भाई-बहनों से मिलते हैं, संस्कारों को बदलने,

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

आदतों को बदलने की बात करते हैं तो सबकी सबसे पहली मान्यता ये होती है कि ये बहुत मुश्किल है। सब बात करने के बाद, सारी विधि बताने के बाद उनसे पूछो कि आप ये करेंगे? कहते, कोशिश करके देखते हैं। उन्हें इस बात पर विश्वास ही नहीं होता कि संस्कार भी बदल सकते हैं।

जो चीज़ हमने की नहीं कभी वो हमें लगता है कि बहुत मुश्किल है। हम मिलते हैं वैज्ञानिक से, इंजीनियर से, एडमिनिस्ट्रेटर से, डॉक्टर से, बिज़नेसमैन से, जो बड़े-बड़े काम कर रहे हैं। बड़ा-बड़ा योगदान देश को दे रहे हैं। इतनी उन्होंने सालों की पढ़ाई की है। इतने आविष्कार किये हैं, इतनी कमाल करके दिखा दी है बाहर की दुनिया में! मतलब ये वो आत्मायें हैं जो कमाल कर सकती हैं। लेकिन जब इतनी छोटी-सी बात आती है कि अपने संस्कार को बदल लें तो वो मुश्किल लगता है। क्योंकि उसपर हमने कभी वर्क किया ही नहीं। जो डॉक्टर रोज़ सर्जरी कर रहे हैं, उनके लिए सर्जरी करना बहुत आसान है। वो तो नींद से उठेंगे, पहुंचेंगे हॉस्पिटल में और कर देंगे सर्जरी। लेकिन जिसने कभी नहीं की है उसके लिए तो वो असंभव है।

कोई भी अगर पढ़ेगा, सीखेगा, करेगा तो कर लेगा। लेकिन अगर हमने सबसे पहले अपने आपको कह दिया कि ये नहीं हो सकता, तो मैंने तो करने की शुरुआत भी नहीं की। सबसे बड़ी मान्यता जो हमारे परिवर्तन में बाधक है, वो है संस्कार को बदलना मुश्किल है। क्योंकि सालों से उस आदत को यूज़ करते, करते, करते हम अनुभव करना शुरु करते हैं कि यही हमारी आदत है। हम सोचते हैं कि गुस्से की रचना हम करते हैं, उस आदत को हम यूज़ कर रहे हैं, ये हमारी पसंद है। लेकिन जिस दिन हमें महसूस होगा कि गुस्सा हम करते नहीं हैं, वो तो अपने आप आ जाता है। मेरा मन, बुद्धि, शरीर अपने आप उस चीज़ की तरफ चला जाता है, मतलब हम उस आदत को यूज़ नहीं कर रहे, वो आदत हमें चला रही है। और जब हम महसूस कर रहे हैं कि वो आदत हमें चला रही है, मतलब हम उस आदत के गुलाम हो गये। लेकिन अब हमें इस गुलामी से छूटना है। अब और गुलामी नहीं।

कामठी-महा.। जिला परिषद् अध्यक्ष रश्मिताई बर्वेजी को माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रेमलता बहन। साथ हैं ब्र.कु. शिला बहन।

पणजी-गोवा। वैकुंठ मेहता नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ को-ऑपरेटिव मैनेजमेंट द्वारा होटल बागा मरीना बीच रिसॉर्ट,नॉर्थ गोवा में बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के लिए आयोजित मैनेजमेंट डेवलपमेंट प्रोग्राम के दौरान चित्र में उपस्थित हैं ब्र.कु. सरिता बहन,पुणे, ए.के. तिवारी,प्रोग्राम डायरेक्टर, ब्र.कु. शोभा बहन तथा ब्र.कु. वनीता बहन।

वर्धा-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ के खेल प्रभाग द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दक्ष नागरिक फाउण्डेशन के अध्यक्ष प्रकाश खंडार, मार्शल आर्ट्स स्पोर्ट्स एंड एडवेंचर एकेडमी वर्धा के अध्यक्ष महेंद्र परिहार, कोषाध्यक्ष अभिजीत पारगावकर, नीलम मुनोत, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी दीदी, प्रतिभागी बच्चे तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत महाशिवरात्रि के अवसर पर निकाली गई शिव अवतरण संदेश यात्रा। साथ ही शिव ध्वजारोहण भी किया गया। इस अवसर पर ब्र.कु. शान्ता बहन ने सभी को शिव अवतरण के बारे में विस्तारपूर्वक बताया।

यह जीवन है

हमारे मन में हमेशा दो तरह के घोड़े दौड़ते हैं। 'सकारात्मक और नकारात्मक' लेकिन जीतता वही है जिसे जैसे विचारों का ज़्यादा खाना मिलता है।

जिस प्रकार से :-

समस्या के बारे में सोचते रहना माना समस्या में अपनी सारी ऊर्जा भर कर उसे शक्तिशाली कर देना। इसी प्रकार भगवान के बारे में सोचते रहना माना स्वयं शक्तिशाली बन कर समस्या को खत्म कर देना।

इसीलिए हमेशा याद रखें :-

हार मानने का कारण हमारी समस्याएं नहीं हैं लेकिन स्वयं में सुधार करने के लिए यह एक चुनौती है। पीछे हटने के लिए समस्याएं एक बहाना नहीं है बल्कि आगे बढ़ने के लिए एक प्रेरणा है।

अतः हमेशा समस्याओं का सामना करने के लिए अपने मन को सकारात्मक विचारों से भरपूर करके शक्तिशाली बनाएं। एक दिन आयेगा जब आप समस्याओं के साथ नहीं बल्कि समाधान के साथ जीना सीख जाएंगे।

परमात्म ऊर्जा

अव्यक्त में सर्विस कैसे होती है,यह अनुभव होता है? अव्यक्त में सर्विस का साथ कैसे सदैव रहता है, यह भी अनुभव होता है? जो वायदा किया है कि स्नेही आत्माओं के हर सेकंड साथ ही हैं, ऐसे सदैव साथ का अनुभव होता है? सिर्फ रूप बदला है लेकिन कर्त्तव्य वही चल रहा है। जो भी स्नेही बच्चे हैं उन्हों के ऊपर छत्र रूप में नज़र आता है। छत्रछाया के नीचे सभी कार्य चल रहा है, ऐसी भासना आती है। व्यक्त से अव्यक्त, अव्यक्त से व्यक्त में आना यह सीढ़ी उतरना और चढ़ना जैसे आदत बन गयी है। अभी-अभी वहाँ, अभी-अभी यहाँ, तो जिसकी ऐसी स्थिति हो जाती है, आभास हो जाता है उसको यह व्यक्त देश भी जैसे अव्यक्त भासता है। स्मृति और दृष्टि बदल जाती है। सभी एवररेडी बनकर बैठे हुए हो? कोई भी देह के हिसाब-किताब से भी हल्का? वतन में शुरु-शुरु में पक्षियों का खेल दिखलाते थे, पक्षियों को उड़ाते थे। वैसे यह आत्मा भी पक्षी है। जब चाहे तब उड़ सकती है। वह तब हो सकता है जब आभास हो। जब खुद उड़ता पक्षी बनें तब औरों को भी एक सेकंड में उड़ा सकते हैं।

अभी ज़्यादा समय अपने को फरिश्ते ही समझो। फरिश्तों की दुनिया में रहने से बहुत ही हल्कापन अनुभव होगा जैसे कि सूक्ष्मवतन को ही स्थूलवतन में बसा दिया है। स्थूल और सूक्ष्म में अंतर नहीं रहेगा। तब सम्पूर्ण स्थिति में भी अंतर नहीं रहेगा। यह व्यक्त देश जैसे अव्यक्त देश बन जायेगा। सम्पूर्णता के समीप आ जायेंगे। जैसे बापदादा व्यक्त में आते भी हैं तो भी अव्यक्त रूप के, अव्यक्त देश के, अव्यक्त प्रवाह में रहते हैं। वही बच्चों को अनुभव कराने लिए आते हैं।

ऐसे आप सभी भी अपने अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ। जब अव्यक्त स्थिति की स्टेज सम्पूर्ण होगी तब ही अपने राज्य में साथ चलना होगा। एक आँख में अव्यक्त सम्पूर्ण स्थिति, दूसरी आँख में राज्य पद। ऐसे ही स्पष्ट देखने में आएंगे जैसे साकार रूप में दिखाई पड़ता है। बचपन रूप भी और सम्पूर्ण रूप भी। बस यह बनकर फिर यह बनेंगे। यह स्मृति रहती है। भविष्य की रूपरेखा भी जैसे सम्पूर्ण देखने में आती है।

जितना-जितना फरिश्ते लाइफ के नज़दीक होंगे उतना-उतना राजपद को भी सामने देखेंगे। आजकल कई ऐसे होते हैं जिनको अपने पास्ट की पूरी स्मृति रहती है। तो यह भविष्य भी ऐसे ही स्मृति में रहे यह बनना है। वह भविष्य के संस्कार इमर्ज होते रहेंगे। मर्ज नहीं, इमर्ज होंगे।

कथा सरिता

आत्म सम्मान

एक भिखारी किसी स्टेशन पर पेंसिलों से भरा कटोरा लेकर बैठा हुआ था। एक युवा व्यवसायी उधर से गुज़रा और उसने कटोरे में 50 रूपये डाल दिये, लेकिन उसने कोई पेंसिल नहीं ली। उसके बाद वह ट्रेन में बैठ गया। डिब्बे का दरवाजा बंद होने ही वाला था कि वो युवा एकाएक ट्रेन से उतर कर भिखारी के पास लौटा और कुछ पेंसिल उठा कर बोला, "मैं कुछ पेंसिल लूँगा। इन पेंसिलों की कीमत है, आखिरकार तुम एक व्यापारी हो और मैं भी।" उसके बाद वह युवा तेजी से ट्रेन में चढ़ गया।

कुछ वर्षों बाद, वह व्यवसायी एक पार्टी में गया। वह भिखारी भी वहाँ मौजूद था। भिखारी ने उस व्यवसायी को देखते ही पहचान लिया, वह उसके पास जाकर बोला, "आप शायद मुझे नहीं पहचान रहे हैं, लेकिन मैं आपको पहचानता हूँ।"

उसके बाद उसने उसके साथ घटी उस घटना का ज़िक्र किया। व्यवसायी ने कहा, "तुम्हारे याद दिलाने पर मुझे याद आ रहा है कि तुम भीख मांग रहे थे। लेकिन तुम यहां सूट और टाई में क्या कर रहे हो?"

भिखारी ने जवाब दिया, "आपको शायद मालूम नहीं है कि आपने मेरे लिए उस दिन क्या किया। मुझ पर दया करने की बजाय मेरे साथ सम्मान के साथ पेश आये। आपने कटोरे से पेंसिल उठाकर कहा, "इनकी कीमत है, आखिरकार तुम भी एक व्यापारी हो और मैं भी।"

आपके जाने के बाद मैंने बहुत सोचा, मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ? मैं भीख क्यों मांग रहा हूँ? मैंने अपनी ज़िंदगी को संवारने के लिए कुछ अच्छा काम करने का फैसला किया। मैंने अपना थैला उठाया और घूम-घूम कर पेंसिल बेचने लगा। फिर धीरे-धीरे मेरा व्यापार बढ़ता गया, मैं कॉपी-किताब एवं अन्य चीज़ें भी बेचने लगा और आज पूरे शहर में मैं इन चीज़ों का सबसे बड़ा थोक विक्रेता हूँ। मुझे मेरा सम्मान लौटाने के लिए मैं आपका तहदिल से धन्यवाद देता हूँ क्योंकि उस घटना ने आज मेरा जीवन ही बदल दिया।

याद रखें कि आत्म सम्मान की वजह से ही हमारे अंदर प्रेरणा पैदा होती है या कहें तो हम आत्मप्रेरित होते हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने बारे में एक श्रेष्ठ राय बनाएं और आत्मसम्मान से पूर्ण जीवन जीएं।

एक ख्वाइश ऐसी भी

वह प्राइमरी स्कूल की टीचर थी। सुबह उसने बच्चों का टेस्ट लिया था और उनकी कॉपियां जांचने के लिए घर ले आई थी। बच्चों की कॉपियां देखते-देखते उसके आँसू बहने लगे। उसका पति वहीं लेटे टीवी देख रहा था। उसने रोने का कारण पूछा।

टीचर बोली, "सुबह मैंने बच्चों को 'मेरी सबसे बड़ी ख्वाइश' विषय पर कुछ पंक्तियां लिखने को कहा था, एक बच्चे ने इच्छा जाहिर की है कि भगवान उसे टेलिविजन बना दे। यह सुनकर पतिदेव हँसने लगे।

टीचर बोली, "आगे तो सुनो बच्चे ने लिखा है यदि मैं टीवी बन जाऊंगा, तो घर में मेरी एक खास जगह होगी और सारा परिवार मेरे इर्द-गिर्द रहेगा। जब मैं बोलूँगा, तो सारे लोग मुझे ध्यान से सुनेंगे। मुझे रोका-टोका नहीं जायेगा और न ही उल्टे सवाल होंगे। जब मैं टीवी बनूंगा, तो पापा ऑफिस से आने के बाद थके होने के बावजूद मेरे साथ बैठेंगे। मम्मी को जब तनाव होगा, तो वे मुझे डांटेंगी नहीं, बल्कि मेरे साथ रहना चाहेंगी। मेरे बड़े भाई-बहनों के बीच मेरे पास रहने के लिए झगड़ा होगा। यहाँ तक कि जब टीवी बंद रहेगा, तब भी उसकी अच्छी तरह देखभाल होगी। और हाँ, टीवी के रूप में मैं सबको खुशी भी दे सकूँगा।"

यह सब सुनने के बाद पति भी थोड़ा गंभीर होते हुए बोला, 'हे भगवान! बेचारा बच्चा... उसके माँ-बाप तो उस पर ज़रा भी ध्यान नहीं देते!"

टीचर पत्नी ने आँसू भरी आँखों से उसकी तरफ देखा और बोली, "जानते हो, यह बच्चा कौन है? हमारा अपना बच्चा, हमारा छोटू।"

सोचिये, यह छोटू कहीं आपका बच्चा तो नहीं!

आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में हमें वैसे ही एक-दूसरे के लिए कम वक्त मिलता है, और अगर हम वो भी सिर्फ टीवी देखने, मोबाइल पर गेम खेलने और फेसबुक से चिपके रहने से गँवा देंगे तो हम कभी अपने रिश्तों की अहमियत और उससे मिलने वाले प्यार को नहीं समझ पायेंगे।

राजकोट-रविरत्नापार्क(गुज.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 51 किलो घी के 'श्री महाकालेश्वर एवं द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन' झाँकी के उद्घाटन अवसर पर शिव ध्वजारोहण, केक कटिंग, दीप प्रज्वलन व महाआरती करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी,क्षेत्रीय निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़, बी.के. झाला साहेब,डिप्टी एस.पी.,भुज डिस्ट्रिक्ट, अजय सिंह जाडेजा,डिप्टी एंटी करप्शन ब्यूरो,राजकोट, उद्योगपति अमुभाई,रविटेक्नो फोर्स, ऐरवादिया साहेब,पूर्व जिला शिक्षण अधिकारी, राजकोट, ब्र.कु. नलिनी बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. अंजु बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित बड़ी संख्या में शहर के लोग।

जम्मू-कटरा(जम्मू-कश्मीर)। ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर महा शिव जयंती महोत्सव एवं शिव ध्वजारोहण कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे मुख्य अतिथि श्री महाराज योग नंद,योग आश्रम कटरा, विशिष्ट अतिथि संजीव शर्मा,राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता, राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन दीदी,प्रभारी,ब्रह्माकुमारीज़ जम्मू-कश्मीर/लद्दाख यूटी एवं नॉर्दन ज़ोन कोऑर्डिनेटर स्पोर्ट्स विंग,ब्रह्माकुमारीज़, वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. रविंदर भाई, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रजनी बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

धमतरी-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित छः दिवसीय शिव दर्शन आध्यात्मिक मेले के पांचवे दिन 'मानवता के संरक्षक' विषय पर समाज सेवियों के लिए आयोजित सम्मेलन में ब्र.कु. सरिता दीदी को उनके आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में योगदान के लिए अग्रवाल समाज, सिंधी समाज व लायंस क्लब द्वारा सम्मानित किया गया। इस मौके पर रो. मनसुख अग्रवाल,अध्यक्ष,रोट्री क्लब, अग्रवाल समाज, लायन अजय पारेख,पूर्व अध्यक्ष,लायंस क्लब धमतरी फ्रेंड्स, हरमिंदर छाबड़ा,अध्यक्ष,सिख समाज, महेश रोहरा, अध्यक्ष,सिंधी समाज, मनोज सोनी,अध्यक्ष,सोनी समाज, महेश कुमार सोनी,सराफा व्यापारी संघ, संजय संकलेचा,जैन समाज, टोपेश्वर देवांगन,देवांगन समाज, यशवंत साहू, अजित साहू,साहू समाज, अशोक पटेल,पटेल समाज, रोहताश मिश्रा,ब्राह्मण समाज, दिलीप मेहता, सचिव, गुजराती समाज, देऊराम शांडिल्य,सेन समाज, संजुराव आड़े पवार, अध्यक्ष,पद्मशाली समाज, बहन कामिनी कौशिक तथा अन्य गणमान्य अतिथियों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

नवरात्रि का त्योहार और अर्थ-बोध

चिरातीत से भारत के लोग आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी तक नवरात्रि का त्योहार भक्ति-भावना और उत्साह से मनाते चले आते हैं। इस त्योहार के प्रारम्भ में ही लोग 'कलश' की स्थापना करते हैं और अखण्ड दीप जगाते हैं जो लगातार नव दिन और रात जगता रहता है। वे इन दिनों कन्या-पूजन करते, नियम पालन करते, जागरण तथा व्रत-उपवास करते, तथा दुर्गा, काली, सरस्वती आदि का पूजन करते हैं।

प्रश्न उठता है कि 'आदि शक्ति' का क्या स्वरुप है, सरस्वती, दुर्गा आदि का क्या वास्तविक परिचय है और अतीत काल में कन्याओं ने क्या महान कार्य किया था जिस की स्मृति में आज तक नवरात्रि में उनका पूजन होता है?

नवरात्रि से सम्बन्धित तीन प्रसंग

इस विषय में जानकारी के लिए नवरात्रि से सम्बन्धित तीन मुख्य प्रसंग, जिनको कथा रुप में भक्त-जन सविस्तार सुना करते हैं, सहायक सिद्ध हो सकते हैं। उनमें से एक आख्यान में तो यह कहा गया है कि पिछली चतुर्युगी के अन्तिम चरण में जब विश्व विनाश निकट था, तब मधु और कैटभ नामक असुरों ने देवी-देवताओं को अपना बन्दी बनाया हुआ था और तब श्री नारायण भी मोह निद्रा में सोये हुए थे। तब ब्रह्मा जी के द्वारा आदि कन्या प्रगट हुई। उसने नारायण को जगाया और उन्होंने मधु तथा कैटभ का नाश कर देवी-देवताओं को मुक्त कराया। दूसरे आख्यान में कहा गया है कि 'महिषासुर' नामक असुर ने स्वर्ग के सभी देवी-देवताओं को पराजित किया हुआ था। त्रिदेव की शक्ति से एक कन्या के रुप जो 'आदि शक्ति' प्रगट हुई, वह दिव्य अस्त्रों-शस्त्रों से सुसज्जित थी, त्रिनेत्री थी और अष्ट भुजाओं वाली थी। उसने महिषासुर का वध किया और देवी-देवताओं को मुक्त कराया। तीसरे प्रसंग में कहा गया है कि सूर्य के वंश में शुम्भ और अशुम्भ नामक दो असुर पैदा हुए। उनके प्रधान कार्यकर्ता का नाम रक्तबिन्दु था, सेनापति का नाम धूम्रलोचन था और उसके दो मुख्य सहायकों का नाम चण्ड और मुण्ड था। शिव जी की शक्ति से 'आदि कुमारी' प्रगट हुई और उस के विकराल रुप से काली प्रगट हुई। उसने चण्ड-मुण्ड का विनाश किया और फिर कालिका ने अपनी योगिनी शक्ति द्वारा धूम्रलोचन और रक्त बिन्दु का भी विनाश किया। आख्यान में बताया गया है कि रक्त बिन्दु की यह विशेषता थी कि यदि उसके रक्त का एक भी बिन्दु गिर जाता तो उस बीज से एक और असुर पैदा हो जाता था। आदि शक्ति ने रक्त बिन्दु का इस तरह विनाश किया कि उसका एक भी बिन्दु अथवा बीज नहीं रहा।

नवरात्रि में जो शक्तियों की पूजा होती है, उसका भी कुछ अर्थ है। नवरात्रि में लक्ष्मी, दुर्गा तथा सरस्वती की पूजा होती है। लक्ष्मी से धन माँगते हैं, सरस्वती विद्या की देवी है तो उससे बुद्धि का वरदान माँगते हैं और दुर्गा से शक्ति माँगते हैं। रावण पर विजय पाने के लिये शक्ति की आवश्यकता है। यह शक्ति भी आन्तरिक चाहिए, क्योंकि विकार भी तो आन्तरिक दुर्बलता से ही उत्पन्न होते हैं। अब यह दुर्गा इत्यादि देवियाँ जिनका कीर्तन करते समय लोग उनसे शक्ति तथा बुद्धि बल माँगते हैं, वे कौन थीं? वास्तव में ये देवियाँ शिव की सन्तान थीं जो 'शिव शक्तियाँ' अथवा 'ब्रह्मा पुत्रियाँ' कहलाती थीं।

शब्दार्थ या भावार्थ

अब देखा जाए तो वास्तव में तो इन आख्यानों में रुपक अलंकार के द्वारा विश्व के एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त का वर्णन किया गया है। परन्तु लोग प्रायः इसका शब्दार्थ ही ले लेते हैं जिससे वे सत्य-बोध से वंचित रह जाते हैं। वास्तव में किसी एक या किन्हीं दो असुरों द्वारा सभी देवी-देवताओं के परास्त होने की बात शब्दार्थ में तो किसी के गले के नीचे उतरना भी मुश्किल है। हाँ, भावार्थ में यह वृत्तान्त बहुत महत्त्वपूर्ण है। वास्तव में 'मधु' और 'कैटभ' 'मीठे' और 'विकराल' अर्थ के वाचक होने से 'राग' और 'द्वेष' के प्रतीक हैं और 'असुर' शब्द 'आसुरी लक्षणों' या 'मनोविकारों' का बोधक है। 'काम', 'मोह' और 'लोभ' – 'मधु' नामक 'असुर' हैं और 'क्रोध' तथा 'अहंकार', 'कैटभ' हैं। इसी प्रकार 'महिष' शब्द का अर्थ 'भैंस' है। भैंस 'मन्द बुद्धि', 'अविवेक' तथा तमोगुण का प्रतीक है।

अभी तो एक प्रश्नोक्ति भी है – "अक्ल बड़ी कि भैंस?" 'धूम्रलोचन' का अर्थ है धुएँ वाली आँखें। अतः यह ईर्ष्या और बुरी दृष्टि का वाचक है। शुम्भ और निशुम्भ हिंसा और द्वेष आदि के वाचक हैं।

वास्तविक भाव

अतः तीनों आख्यानों का वास्तविक भाव यह है कि पिछली चतुर्युगी के अन्त में जब विनाश काल निकट था और सृष्टि पर अज्ञान तथा तमोगुण रुप रात्रि छाई हुई थी तब राग(मधु) और द्वेष(कैटभ) ने (शुम्भ और निशुम्भ) उन सभी नर-नारियों को जो कि सतयुग में दिव्यता सम्पन्न होने से देवी-देवता थे परन्तु धीरे-धीरे अपवित्रता की ओर अग्रसर होते आये थे, अपना बन्दी बना रखा था। यहाँ तक कि सतयुग के आरम्भ में जो देव-शिरोमणी 'श्री नारायण' थे, अब वे भी जन्म-जन्मान्तर के बाद मोह-निद्रा में विलीन थे। ऐसी धर्म-ग्लानी के समय परमपिता शिव ने त्रिदेव के द्वारा भारत की कन्याओं को ज्ञान, योग तथा दिव्य गुण रुपी शक्ति से सुसज्जित किया। यह ज्ञान ही उनका तीसरा नेत्र था और अन्तर्मुखता, सहनशीलता आदि दिव्य शक्तियाँ ही उनकी अष्ट भुजायें थीं। इन्हीं शक्तियों के कारण वे 'आदि शक्ति' अथवा 'शिव शक्ति' कहलायीं। इन आदि कुमारियों अथवा शक्तियों ने भारत के नर-नारियों को जो कि सतयुग में देवी-देवता थे, जगाया और उन्हें उत्साहित करके आसुरी प्रवृत्तियों का नाश किया - ऐसा कि उनका बीज, अंश या बिन्दु भी नहीं रहने दिया कि जिससे संसार में फिर आसुरीयता पनप सके। उन द्वारा ज्ञान दिये जाने की यादगार के रुप में आज नवरात्रियों के प्रारम्भ में 'कलश' की स्थापना की जाती है। उन द्वारा जगाये जाने की स्मृति में आज भक्तजन जागरण करते हैं तथा योग द्वारा आत्मिक प्रकाश किये जाने के कारण ही वे अखण्ड दीप जगाते हैं। उन कन्याओं के महान कर्त्तव्य के कारण ही वे हर वर्ष इन दिनों कन्या-पूजन करते हैं और सरस्वती, दुर्गा आदि से प्रार्थना करते हैं कि – "हे अम्बे, हे माँ, मेरी ज्योति जगा दो और मुझे ऐसी शक्ति प्रदान करो कि मेरे अन्तर का अन्धकार मिट जाये।"

आत्मा का दीपक जगाओ

परन्तु जन-जन को यह मालूम नहीं है कि अब पुनः कलियुग के अन्त का समय चल रहा है और पुनः आसुरीयता तथा भ्रष्टाचार का बोलबाला है तब परमपिता शिव पुनः कन्याओं को ज्ञान शक्ति देकर पुनः जन-जन की आत्मिक ज्योति जगा रहे हैं और आसुरीयता के अन्त का कार्य करा रहे हैं और इसलिए हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम केवल जयघोष या कर्म काण्ड में ही न लगे रहें बल्कि अपने मन में बैठे महिषासुर, मधु-कैटभ, रक्त बिन्दु या धूम्रलोचन का नाश कर दें। वास्तव में ज्ञान द्वारा आत्म-ज्योति जगाना ही सच्चा दीप जगाकर सही रुप में नवरात्रि मनाना है। यही नारायण द्वारा मोह-निद्रा को छोड़ना तथा मधु-कैटभ को मारना या (आध्यात्मिक) शक्ति द्वारा महिषासुर किंवा धूम्रलोचन और रक्त बीज आदि का संहार करना है।

नई दिल्ली-हरिनगर। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान एवं 'शिव जयंती महोत्सव' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. संजीव पतजोशी,आई.पी.एस.,ज्वाइंट सेक्रेट्री,मिनिस्ट्री ऑफ पंचायती राज,भारत सरकार, श्याम शर्मा,पूर्व मेयर,एमसीडी, शिव सिंह,कमांडर,नेवी, ब्र.कु. सुशांत,नेशनल कोऑर्डिनेटर,मीडिया विंग, ब्रह्माकुमारीज़, राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी,डायरेक्टर,ओ.आर.सी.,हरिनगर,ब्रह्माकुमारीज़ तथा अन्य।

बरनाला-पंजाब। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी धीरज दद्दाहूर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ब्रिज बहन, ब्र.कु. सुदर्शन, ब्र.कु. पुष्प तथा अन्य गणमान्य लोग।

नई दिल्ली-ओम विहार। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण करते हुए काउंसलर श्रीमति आभा चौहान, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विमला बहन, मंडल महामंत्री राजेश जी, उत्तम नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लीला बहन, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. सुशांत भाई, नांगली विहार सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हेमा बहन, आर.जे. रमेश,रेडियो मधुबन,शांतिवन तथा अन्य।

जयपुर-राजापार्क(राज.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत महाशिवरात्रि महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. पूनम दीदी,उपक्षेत्रीय संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़, सीताराम अग्रवाल, कोषाध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी, रविंद्र उपाध्याय,बॉलीवुड सिंगर, रवि नैयर, अध्यक्ष, राजापार्क व्यापार मंडल एवं प्रमुख समाजसेवी, नीरज अग्रवाल,पार्षद तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

हल्द्वानी-रामपुर रोड(उत्तराखंड)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र एवं ब्रह्माकुमारीज़ पाठशालाओं द्वारा शिव जयंती के अवसर पर भिन्न-भिन्न स्थानों से निकाली गई शोभायात्रा। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में नैनीताल हाईकोर्ट के वकील रामसिंह सम्मल, अरविन्द जोशी,एडिशनल डिस्ट्रिक्ट को-ऑपरेटिव ऑफिसर,को-ऑपरेटिव बैंक,उत्तराखंड, रीता दुर्गापाल,समाज सेविका, ब्र.कु. कर्नल सती, ब्र.कु. नीलम बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. वीना बहन,नैनीताल तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

कमालगंज-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में एस.एच.ओ. अमर पाल सिंह, रामाश्रम संचालक बाबू सिंह, उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उषा बहन तथा ब्र.कु. सुमन बहन।

चलो खुद को परमात्मा के रंग में रंगते हैं

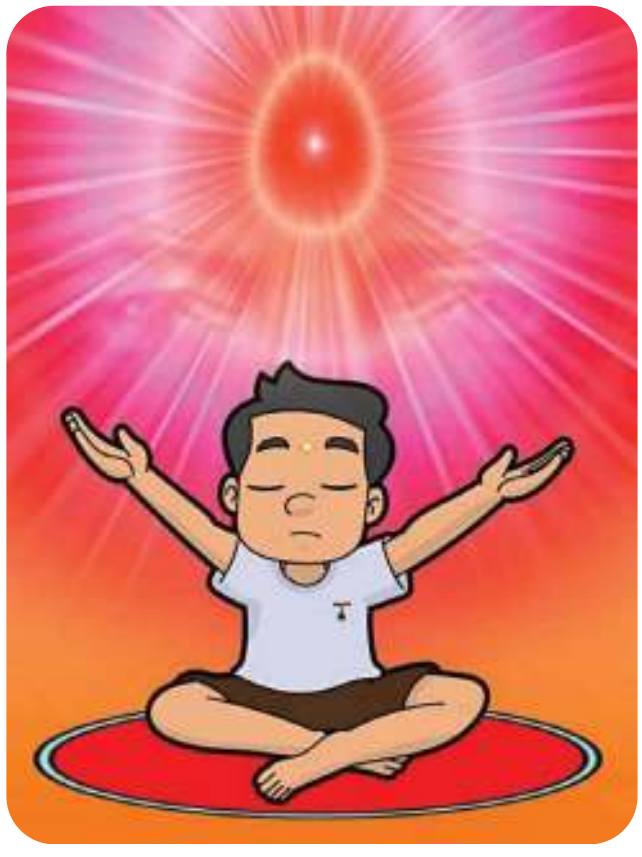

पौराणिक कथाओं में होली का त्योहार कैसे और क्यों मनाया जाता है इसका वर्णन है। उसमें कहा जाता है कि होलिका, जिसको एक वरदान प्राप्त था कि अगर वो अग्नि में बैठी तो अग्नि भी उसे जला नहीं सकती। जो कहानी में भी है कि प्रहलाद विष्णु भक्त थे। उनके अन्दर इतनी सारी आस्थायें थीं, विष्णु जी के लिए। तो उनकी आस्था को छिन्न-भिन्न करने के लिए उनके पिता जो कि चिढ़ते थे या कह सकते हैं कि पसंद नहीं करते थे, वो कहते थे कि उसकी पूजा नहीं करो। उन्होंने होलिका को आदेश दिया था कि आप इनको लेकर अग्नि में बैठो। और कहानी ये है, कथा ये है कि वहाँ पर होलिका ही जल जाती है और प्रहलाद बच जाते हैं। इससे क्या एक रहस्य सामने आता है कि अगर कोई भी वरदान आपको मिला हुआ है, उस वरदान का आपने सदुपयोग नहीं किया, उसको एक अच्छे कार्य के लिए, कल्याणकारी कार्य के लिए नहीं किया तो वो चीज़ हमारे लिए भी अकल्याणकारी हो ही जायेगी। तो श्राप बन गया हमारे लिए किसी का दिया हुआ वरदान। तो वरदान अगर श्राप बन जाये तो उससे ज़्यादा अकल्याणकारी बात क्या हो सकती है हमारे लिए।

तो आप इसके रहस्य के साथ समझेंगे मनायेंगे तो निश्चित रूप से बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। होली का त्योहार पवित्रता का त्योहार है और पौराणिक कथा और गाथा के आधार से ये अगर लिया जाये तो कहा जाता है कि जो पवित्र है, जो शुद्ध है, जो स्वच्छ है, जो साफ है वो हमेशा सेफ है। परमात्मा की आंच में भी है वो, परमात्मा की गोद में भी है वो। परमात्मा उसको सहारा भी देता है। इसीलिए प्रहलाद तो एक मिसाल के रूप में दिखाएंगे वहाँ, लेकिन हम सभी की रक्षा भी इन्हीं तरीके से होती है चाहे वो दुनिया की प्रकृति के कोई भी तत्व हों लेकिन उन तत्वों को पूरी तरह से तब तक अपने अन्दर समेट नहीं सकते जब तक हमारे अन्दर एक भाव नहीं है कि मुझे सिर्फ और सिर्फ परमात्मा की याद में ये कार्य करना है। इसीलिए पहले होलिका जलाई जाती है जिसमें कहा जाता है कि गेहूँ, जौ, चने, गन्ना और सरसों ये जो पांच चीज़ें उसके अन्दर डाली जाती हैं इनका सही मायने में भाव जो कहेंगे वो ये कि हमारे अन्दर थोड़ा भी वैर, या कहेंगे वैर भाव, बुराइयां हैं वो पूरी तरह से जलकर नष्ट हो जायें। पूरी तरह से हम स्वच्छ और साफ हो जायें उसके बाद ही हमारे ऊपर परमात्मा का रंग चढ़ता है।

तो ये रंगों का त्योहार निश्चित रूप से दुनिया के लिए है लेकिन इसमें एक आध्यात्मिकता है, बहुत गहराई है कि परमात्मा के रंग में जब हम रंगते हैं, जब परमात्मा की याद में रहना शुरु करते हैं तो हमको देखकर लोगों को परमात्मा की याद आती है, और इसका मिसाल दुनिया में बहुत बार मिलता है कि परमात्मा के रंग में अगर हम एक बार रंग जायें तो उसको गीतों और गज़लों के माध्यम से लोग सामने रखते हैं आज के भक्तिमार्ग के लोग, 'ऐसा रंगों कि रंग न छूटे धोबिया धोए चाहे सारी उमरिया, रंग दे चुनरिया'। तो ये जो गीत हैं, ये जो बातें हैं पूरी तरह से इस बात को बंया करती हैं कि अगर हम परमात्मा के रंग में रंग जायें तो कोई अंतर न कर पाये। यहीं से आत्मा और परमात्मा का कॉन्सेप्ट (अवधारणा) शायद उभर कर आया होगा कि आत्मा,परमात्मा की याद में इतनी खो गई कि किसी को पता ही नहीं चला ऋषि-मुनि, तपस्वी को कि आत्मा कौन है, और परमात्मा कौन है।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

तो इस होली के त्योहार को अगर हम इस रहस्य के साथ मनायें तो इसके साथ शायद गहरा न्याय होगा लेकिन शायद थोड़ा बहुत ऐसे ही खेलते रहे तो इतने समय से हम वही करते आये हैं जो हम कर रहे थे। परमात्मा का ये कहना, ये संदेश है हम सभी के लिए कि अब तक हम जो करते आये वो एक व्यवहारिकता थी या कहें कि ये एक त्योहार है लेकिन अभी हमको इसके साथ सच में न्याय करना है तो हमको पवित्रता को थोड़ा-सा अपने जीवन में लाना चाहिए। क्योंकि पवित्रता जब हमारे जीवन में उतरती है तो उससे हमारे घर में सुख-शांति आ जाती है। तो क्यों न इस होली के त्योहार को हम सुख-शांति के अवसर में बदलें। और ये जब ये त्योहार सुख-शांति के अवसर में बदलेगा तो हर बार जब भी ये होली आयेगी तो उस समय हमारे अन्दर एक ही भाव उत्पन्न होगा और वो होगा कि हम हमेशा ये याद कर पायेंगे कि अगर हमारे घर में अशांति है, दुःख है, तकलीफ है, दर्द है तो ज़रूर कहीं न कहीं अपवित्रता हमारे पास आ गई है, उसको मुझे निकालना है, खत्म करना है। तो मुझे इस बार ये अपने आप में प्रण लेना है।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

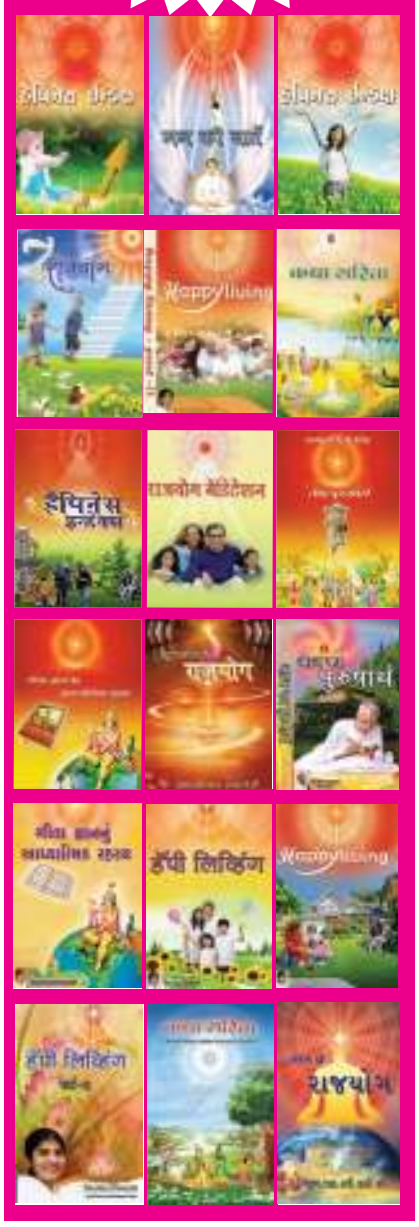

मन की बातें
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मैं मुजफ्फरपुर से सावित्री सरकार हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि मेरे कुछ सम्बन्धियों ने मेरे पति को कुछ खिलाया-पिलाया है, तांत्रिक प्रयोग करा दिया है। जिससे वो बहुत ज़्यादा शराब पीने लगे हैं। हो सकता है ये मेरा शक भी हो लेकिन पति के इस हाल के कारण घर में बहुत अशान्ति रहती है, तो मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : पहले क्या था हम भी इसे नहीं मानते थे। और स्पिरिचुअल नॉलेज में तो इन सबका बहुत ज़्यादा महत्त्व भी नहीं है। क्योंकि स्पिरिचुअल पॉवर जो है वो अपने में बहुत बड़ी चीज़ होती है। उसके सामने ये छोटी-छोटी चीज़ें ठहरती नहीं। अगर कोई किसी को कुछ खिला-पिला भी दे उल्टा-सुल्टा, तंत्र-मंत्र की शक्ति का प्रयोग करके। हम तो उसे जानते भी नहीं लेकिन वो तो चीज़ शरीर में चली गई। तो आपके पति को अगर किसी ने कुछ खिला-पिला दिया है तब से ही आपको ऐसा फील हो रहा है कि सबकुछ बदल गया है तो आपको एक तो पानी चार्ज करके अपने पति को पिलाना चाहिए। और पानी चार्ज करने का तरीका है पानी का गिलास हाथ में लेंगे और उस पर दृष्टि डालकर सात बार संकल्प करेंगे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, यानी हम सर्वशक्तिवान के बच्चे हैं तो हम बहुत शक्तिशाली हैं। जब हम ऐसा करेंगे तो उस पानी में ज़्यादा शक्ति आ जायेगी। जिसको हम कहते हैं चार्जड वॉटर। पानी हमारे वायब्रेशन्स के लिए बहुत सेंसीटिव है। ये पानी जब वो व्यक्ति पीयेगा क्योंकि हमारे शरीर में 70प्रतिशत से ज़्यादा पानी है, तो उस पानी में मिक्स होगा और बहुत सारी चीज़ों को जो बहुत निगेटिव हो गई हैं शरीर में उनको वो नष्ट करेगा। ऐसे पानी चार-पाँच बार अवश्य उसको पिलाएं। बाकी आपको करना होगा राजयोग मेडिटेशन। राजयोग एक विद्या है जो एक मिनट में नहीं सीख सकते, इसके लिए 1-1 घंटे के तीन सेशन अवश्य लेने होंगे। ये तीन लेसन आपको लेने होंगे। ताकि आपकी बुद्धि में ये क्लीयर हो जाये कि हम कौन हैं, परमात्मा कौन है, उससे अपना नाता कैसे जोड़ें, उससे शक्तियां कैसे लें। जब ये सब पता होगा तभी राजयोग मेडिटेशन कर सकते हैं। और ये आपको रोज़ एक घंटा मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ इस स्वमान को सात बार याद करके करना है। तो जब आप मेडिटेशन की शक्ति अपने पति को ट्रांसफर करेंगी तो ये सारी शक्ति उन्हें चली जायेगी और उन पर जो भी निगेटिव इफेक्ट हुआ है वो समाप्त हो जायेगा। बाकी घबराने की कोई बात नहीं है। तंत्र-मंत्र की शक्ति इतनी बड़ी नहीं है कि किसी को मार डाले। और ये देखा गया है कि इन सर्वशक्तिवान की शक्तियों के आगे ये तंत्र-मंत्र की शक्ति ठहरती नहीं।

प्रश्न : मैं कुरुक्षेत्र से रामसेवक हूँ। मैंने आपके विद्यालय द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी को देखा है। मेरी ब्रह्माकुमारी बहनों से इस बात को लेकर बहस भी हुई कि श्रीकृष्ण तो द्वापर में हुए थे तो फिर आप उन्हें सतयुग में क्यों दिखाते हैं? उनके उत्तर से मैं संतुष्ट नहीं हुआ लेकिन अगर हो सके तो आप इसका उत्तर दें।

उत्तर : कुरुक्षेत्र में तो श्रीकृष्ण, पांडवों, कौरवों की बहुत चर्चा है, यादगारें भी हैं और मान्यता के अलावा भावना भी है। और एक कॉमन मान्यता है कि श्रीकृष्ण तो द्वापर में थे और भगवान के अवतार थे। जब-जब इस संसार में हालात बुरे होते हैं, अधर्म बढ़ जाता है, पाप बढ़ जाता है तब परमात्मा आकर उसको समाप्त करते हैं। देखिए मैं तो सीधी-सी बात कहता हूँ मान लो द्वापर में श्रीकृष्ण के रूप में वो आये भी थे, उन्होंने अपना कुछ दिव्य कार्य भी किया था। लेकिन सतयुग के जो श्रीकृष्ण हैं हम उनकी चर्चा कर रहे हैं। वो सतयुग के फर्स्ट विश्व महाराजन, जो इस संसार की सबसे श्रेष्ठ आत्मा, पहले नम्बर की आत्मा है, जो परमात्मा नहीं परमात्मा का प्रतिरूप है। नेकस्ट टू गॉड है यानी मामूली-सा ही अन्तर दोनों में है। दोनों बिल्कुल समान दिखाई देंगे। लेकिन बस परमात्मा निराकार है और वो साकार में है जिस श्रीकृष्ण की बात करते हैं वो सतयुग के आदि के हैं। क्योंकि श्रीकृष्ण सौलह कला सम्पूर्ण थे और सौलह कला सृष्टि की सतयुग के आदि में ही होती है। देखिए ये क्रम है, जितनी कलायें सृष्टि की होंगी, उतनी ही कला से सम्पन्न आत्मायें वहाँ जन्म लेंगी। श्रीकृष्ण तो सौलह कला सम्पूर्ण हैं। जब दुनिया परफेक्ट है तब उनका आगमन होता है। लेकिन ये जो पाप नाश के लिए, अधर्म का नाश करने के लिए, सत्य धर्म की स्थापना करने के लिए जो परमात्मा आते हैं क्योंकि परमात्मा निराकार है उनको इन आँखों से नहीं देखा जा सकता, वो इस साकार माध्यम के द्वारा अपना कार्य करते हैं। तो परमात्मा के उसी दिव्य कार्यों को लोगों ने श्रीकृष्ण के रूप में वर्णित कर दिया है। क्योंकि श्रीकृष्ण ही महान हैं इस धरा पर। ताकि लोग उनकी भावनाओं के कारण इस बात को स्वीकार भी कर लेंगे। श्रीकृष्ण की मान्यता सबसे अधिक थी तब जब ये बात प्रचलित हुई, ये चर्चाओं में आई तो श्रीकृष्ण के रूप में परमात्मा का कार्य दिखा दिया गया। वास्तव में ये दो अलग चीज़ें हैं एक श्रीकृष्ण सतयुग के फर्स्ट प्रिंस और एक परमात्मा का दिव्य कार्य जो अधर्म के समय, धर्म ग्लानि के समय, पाप वृद्धि के समय। हम आपसे कहेंगे कि आप सेन्टर जाकर थोड़ा-सा ज्ञान लें। ज्ञान लेने में आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है और देवता कौन है, देवता कब थे और ये जब स्पष्टीकरण हो जायेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

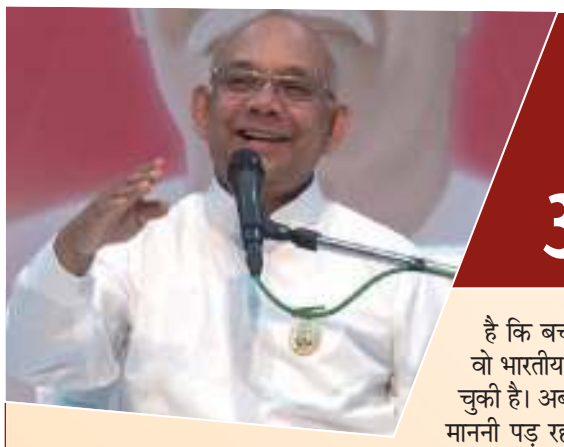

व्यर्थ के कारणों को अच्छी तरह समझें...!

ज्ञान का भंडार अपने पास हो

हमें अपने पर विजय पानी है। अब समय है... जो नये भी बाबा के बच्चे आ रहे हैं, उनको भी सीखना है कि व्यर्थ को जल्दी से जल्दी कम करें, खत्म करें। अपनी जाँच करें। देखो, व्यर्थ ऐसे खत्म नहीं होता कि मुझे व्यर्थ नहीं सोचना है, मुझे व्यर्थ को कंट्रोल करना है, ये तो सभी सोचते हैं। व्यर्थ खत्म होगा... लेकिन मुझे किस कारण से व्यर्थ चलता है... उसको पकड़ लें ज़रा। किसी एक्सपेक्टेशन के कारण, कामना के कारण, किसी व्यर्थ की इच्छा के कारण, किसी अपने बुरे संस्कार के कारण, किसी के व्यवहार के कारण, काम गलत हो जाने के कारण, सफलता न मिलने के कारण और भी ऐसे बीस कारण हो सकते हैं। उस कारण का जब तक पता नहीं चलेगा तब तक हम व्यर्थ से बचेंगे नहीं। और कारण को जानकर हमें करना क्या है, उस एक चीज़ को खत्म करने के लिए, क्योंकि ऐसा नहीं है कि सबके पास बीस बातें हों। एक-दो बात ही होती हैं व्यर्थ की। बच्चा मानता नहीं है, बुरा व्यवहार करता है, इनसल्ट कर रहा है, पढ़ाई पर या काम पर ध्यान नहीं दे रहा है...। संकल्प चलते हैं बहुत।

अब इसमें ज्ञान की किन बातों का प्रयोग करें, वो ज्ञान का भंडार हमारे पास होना चाहिए। जिसकी हमने चर्चा की कि पच्चीस सुंदर प्वाइंट आप नोट करें और ऐसी परिस्थिति जिसमें हमारे व्यर्थ संकल्प ज़्यादातर दूसरों के कारण चल रहे हों, भले बच्चों के, परिवार के, ऐसे में उन्हें भी वायब्रेशन्स देकर ठीक किया जा सकता है और अपने को भी। क्योंकि ये चीज़ जबरदस्ती करने वाली नहीं है कि बच्चा आपकी बात मानेगा ही। वो भारतीय महान कल्चर अब लोप हो चुकी है। अब तो बच्चों की बात बड़ों को माननी पड़ रही है। खेल बदल गया है। इसलिए व्यर्थ को खत्म करने के लिए ज्ञान का बल, योग का बल, सोचने का तरीका बदलते चलें।

आपकी पवित्रता निगेटिविटी को समाप्त करेगी

हमारा एक-एक संकल्प, यदि वो निगेटिव है तो निगेटिव प्रभाव डालेगा। यदि वो पॉज़िटिव है तो बहुत जल्दी बातों को ठीक कर देगा। तो सभी को मुक्त होना है ईर्ष्या-द्वेष से। बाबा ने मुरलियों में कई बार कहा है, अपने को मुक्त करो तो मुक्तिधाम का गेट खुले। अपने को मुक्त करो तो तुम बहुतों को व्यर्थ से मुक्त कर पाओगे। हम विजयी बनें ईर्ष्या-द्वेष पर, नफरत और वैरभाव पर, तेरे और मेरे पर, व्यर्थ के छोटे-छोटे विचारों पर। हमें स्वयं को ये सब चीज़ें सोचनी हैं। उसपर बहुत अच्छा चिंतन करके, ज्ञान के बल से अपनी प्युरिटी को बढ़ाना है, नहीं तो क्या हो रहा है बहुतों के साथ, प्युरिटी बहुत अच्छी, लेकिन और बातों के कारण व्यर्थ संकल्पों के तूफान, मैं-मेरे के कारण, ईर्ष्या-द्वेष के कारण, परचिंतन-परदर्शन के कारण।

पवित्रता को शक्ति बनायें

पुराने अच्छे पुरुषार्थी भाई-बहनों ने तो ये बात अच्छी तरह जानी और समझी है, लेकिन नये भी जान लें, अगर प्युरिटी अपनाने के बाद व्यर्थ संकल्प किसी भी कारण से बहुत चलते हैं तो प्युरिटी भी कमज़ोर पड़ती है। प्युरिटी हमारी शक्ति नहीं बनेगी। प्युरिटी का तेज मस्तक पर नहीं आयेगा। प्युरिटी का प्रभाव परिवार पर दिखाई नहीं देगा। नहीं तो याद रखेंगे, जिस घर में एक पवित्र आत्मा हो, बहुत अच्छी पवित्र आत्मा, उनके पवित्र वायब्रेशन्स उनके पूरे घर के लिए बहुत बड़ा सहारा बन जाते हैं। तो गृहस्थ में रहने वाले सभी भाई-बहनें अपने समर्पण भाव को आगे बढ़ायें।

बाबा को परिवार का हेड बना लें

बाबा को भी साथ लें अपने परिवारों में। कभी बाबा ने सिखाया था बहुत पहले, बाबा को अपने परिवार का हेड बना लो। बाबा को हेड बनायेंगे तो सारे हेडेक खत्म हो जायेंगे। जो हेड होगा उसे ही न चिंता होगी परिवार की! तो सभी आज ही कर देंगे अभी, बाबा को परिवार का हेड। मैं हेड नहीं, मैं हेड होउंगा तो हेडेक मुझे होगी, बाबा को होने दो ना हेडेक! उसको होता ही नहीं। वो तो सारे संसार को पल भर में संभालने वाला है। तो हम मुरलियों का बहुत अच्छा चिंतन करेंगे। हमें याद रहे, भगवान के वचनों में वही वायब्रेशन्स चाहे वो सौ साल बाद सुने जायें सदा रहेंगे। आप लौकिक गीता की बात देख लो, उसमें तो गड़बड़ भी बहुत है, लेकिन उसको पढ़ने से भी मनुष्य के वायब्रेशन्स बहुत अलौकिक होने लगते हैं। केवल पढ़ने से!

यहाँ तो भगवान के डायरेक्ट महावाक्य हैं। उसके एक-एक शब्द के साथ उसके वायब्रेशन्स भी पूरी सभा में फैलते हैं। इसलिए ये मुरली भगवान की अपनी रूहों से रूह-रिहान है। ऐसे ही सुनेंगे। बाबा सामने बैठकर मुझ आत्मा से रूह-रिहान कर रहा है। बातें कर रहा है। ये सुख लेंगे बहुत। इस तरह बाबा की मुरलियाँ सुनते व पढ़ते वक्त बाबा से अंदर ही अंदर स्वयं को शक्तिशाली बनायेंगे। उनसे विजयश्री का तिलक लेंगे। अपने को किसी न किसी चिंता से, भय से, परेशानी से, व्यर्थ से, दुःखों से, जल्दी दुःखों की फीलिंग होने से मुक्त करेंगे।

सिरसागंज-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में सेवाकेन्द्र से निकाली गई आध्यात्मिक जन जागरण रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए फिरोज़ाबाद सांसद डॉ. चन्द्रसेन। साथ हैं ब्र.कु. गीतांजलि बहन, ब्र.कु. शशि बहन, जैनुलाब्दीन जी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

जयपुर-वैशाली नगर(राज.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' परियोजना के अंतर्गत 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में राज्य मंत्री कारगिल हीरो राम सहाय बाजिया,राज्यस्तरीय सैनिक कल्याण सलाहकार समिति,प्रदेशाध्यक्ष,प्रदेश भूतपूर्व सैनिक कल्याण समिति, राजेश यादव,प्रदेश कांग्रेस समिति के सचिव, अशोक शर्मा,ओएसडी,कृषि मंत्री, प्रवीण यादव,चेयरमैन,नगर पालिका एवं पार्षद, अक्षत खूंटेटा,क्षेत्रीय पार्षद, राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रकला दीदी तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

इंदौर-प्रेम नगर(म.प्र.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' परियोजना के अंतर्गत त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव के अवसर पर 'आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा मानव से देवत्व की ओर' विषय पर आयोजित 'सर्वधर्म समागम' में आदित्य दीक्षित,पूर्व प्रदेश सह मीडिया प्रभारी,युवा मोर्चा, महंत श्री बालक दास जी महाराज,ब्रदीनाथ, झामनदास ओचानी,ट्रस्टी,स्वर्ण मंगल भवन,लाड़काना नगर, जोहर अली,प्रतिनिधि,बोहरा समाज, इंदौर प्रेमनगर पश्चिम क्षेत्र की मुख्य संचालिका ब्र.कु. शशि दीदी, ब्र.कु. मनीषा बहन, ब्र.कु. रेखा बहन, बहन मंजूषा जोहरी, ब्र.कु. शारदा बहन, ब्र.कु. यश्वनी बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

जयपुर-श्रीनिवास नगर(राज.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' परियोजना के अंतर्गत 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में सीताराम अग्रवाल,निदेशक,राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट एंड इन्वेस्टमेंट कॉ.लि.,रिको, संतोष अग्रवाल,नगर निगम क्षेत्रीय पार्षद, कैलाश अग्रवाल,जनसेवक, मदन लाल शर्मा,उद्योगपति,शिवा बनियान, डॉ. पूनम गोयल,चाइल्ड स्पेशलिस्ट, डॉ. सुनील गुप्ता,आई स्पेशलिस्ट,डायरेक्टर,दृष्टि आई हॉस्पिटल, ब्रह्माकुमारीज़ अजमेर उपक्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शांता दीदी, ब्र.कु. हेमा बहन, ब्र.कु. कविता बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

बिलासपुर-छ.ग.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत आयोजित महाशिवरात्रि कार्यक्रम के दौरान रेलवे पुलिस उपनिरीक्षक भवानी शंकर नाथ को शिव संदेश देते हुए ब्र.कु. मंजू बहन।

घोघंबा-गुज.। महाशिवरात्र एवं आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शमशानगृह में स्थायी प्रदर्शनी लगाई गई। जिसके अवलोकन पश्चात् घोघंबा के नवनिर्वाचित सरपंच निलेशभाई वरीया, भाजपा प्रमुख गुणवंत सिंह, जिला पंचायत सदस्य भिखाभाई, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. क्षमा बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित हैं।

उदयपुर-राज.। डबोक एयरपोर्ट के पास स्थित ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र में शिवजयंती एवं आज़ादी के अमृत महोत्सव के कार्यक्रम में सीआईएसएफ के डिप्टी कमांडेंट अतुल जी, जेके सीमेंट फैक्ट्री के डॉ. रामप्रकाश, ब्र.कु. रीटा दीदी, ब्र.कु. यश भाई, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कल्पना दीदी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

राजकोट-अवधपुरी(गुज.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' परियोजना के अंतर्गत 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर 'अलौकिक अमरनाथ शिव दर्शन और आध्यात्मिक प्रदर्शनी' के अवलोकन एवं परमात्मा शिव की आरती के पश्चात् समूह चित्र में क्विक रेसपॉन्स टीम के मेम्बर्स, दिनेश भाई ईगल ट्रैवल्स, ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. रमा बहन तथा अन्य।

पटना-बुद्धा कॉलोनी(बिहार)। महाशिवजयंती महोत्सव पर शिव ध्वजारोहण के साथ चैतन्य झाँकी और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस मौके पर वार्ड काउंसलर रजनीकांत जी, डॉ. बृन्द, ब्र.कु. मृदुल बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. वंदना बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत 'कल्चर ऑफ कमिटमेंट' कार्यक्रम की लॉन्चिंग

ब्रह्माकुमारीज़ ने राजयोग द्वारा सारे विश्व में बनाई एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान : ओम बिरला

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारी संस्था आध्यात्मिक सशक्तिकरण के माध्यम से विश्व को शांति और प्रेम के सूत्र में बांधने का महान कार्य कर रही है। उक्त विचार भारतीय लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत प्रशासक वर्ग के राष्ट्रीय कार्यक्रम की लॉन्चिंग पर व्यक्त किये। 'कल्चर ऑफ कमिटमेंट' विषय पर सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था ने राजयोग के द्वारा सारे विश्व में एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान बनाई है। आध्यात्मिक ज्ञान से समाज के हर वर्ग को जोड़ने का सराहनीय कार्य कर रही है। आध्यात्मिकता और विज्ञान के समन्वय से ही श्रेष्ठ समाज की स्थापना की जा सकती है। डॉ. बी.डी. कल्ला,कैबिनेट मंत्री,शिक्षा,कला, साहित्य एवं संस्कृति,राजस्थान सरकार ने कहा कि एक समय था जब भारत में मानव ही नहीं बल्कि प्रकृति भी अपनी मर्यादा में रहती थी। मर्यादाओं के उल्लंघन के कारण ही समस्याओं का जन्म हुआ। उन्होंने कहा कि भगवान की भी हमारे साथ कमिटमेंट है कि जब मानवीय मूल्यों का ह्रास होगा, तब मैं पुनः उनकी स्थापना करूंगा। ओ.आर.सी. निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि जब हम ज़िम्मेवारी के साथ पूर्ण मनोयोग से कोई कार्य करते हैं तो अनेकों की दुआओं के पात्र बनते हैं। साथ ही स्वयं में संतुष्टता का अनुभव करते हैं। मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी बहन ने कहा कि हमें कमिटमेंट का संस्कार बनाना है। क्योंकि संस्कार से ही संस्कृति का निर्माण होता है और जैसी संस्कृति होती है वैसा ही संसार बनता है। इस अवसर पर विशेष रूप से भारत के उप-राष्ट्रपति माननीय वेंकैया नायडू ने भी लिखित रूप में कार्यक्रम की सफलता के प्रति अपना शुभ कामना संदेश भेजा। ब्रह्माकुमारीज़,ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. चार्ली तथा भोपाल से संस्था की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. अवधेश बहन ने भी शुभ कामनायें देते हुए अपने विचार रखे। ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय,माउण्ट आबू से कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. हरीश भाई ने ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासक वर्ग के सवाओं की जानकारी दी। इस मौके पर प्रमुख रूप से सुधांशु पांडे,सचिव,खाद्य एवं सार्वजनिक परिवहन विभाग,उपभोक्ता एवं खाद्य मंत्रालय, नितिन चन्द्र,अतिरिक्त सचिव, विधि कार्य विभाग,न्याय एवं कानून मंत्रालय, मृदुल कुमार,अति. सचिव,विदेश मंत्रालय, आशीष कुमार चतुर्वेदी, महानिदेशक,शिक्षा मंत्रालय, वी. शशांक शेखर,मुख्य सचिव और मुख्य चुनाव अधिकारी,नागालैंड, रवि कपूर, सीईओ,संसद टीवी, प्रशान्त गोयल,सचिव, फाइनेंस एंड प्लानिंग एंड रिसर्च,पुडुचेरी एवं कृष्ण कुमार,पूर्व प्रिन्सीपल चीफ कमिश्नर ऑफ इनकम टैक्स,उत्तर पश्चित क्षेत्र आदि प्रशासनिक सेवाओं से जुड़े महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने कार्यक्रम के प्रति अपनी शुभकामनायें दीं। ओ.आर.सी. की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. मधु बहन ने राजयोग का अभ्यास कराया। ब्र.कु. विधात्री ने सभी का धन्यवाद किया तथा कार्यक्रम संचालन ब्र.कु. हुसैन बहन ने किया।

> ब्रह्माकुमारी संस्था जाति, धर्म और भाषा से ऊपर उठकर लोकहित में कार्य कर रही है। वर्तमान समय हम सभी को कमिटमेंट की बहुत आवश्यकता है। कमिटमेंट के आधार से ही हम एक मूल्यनिष्ठ समाज का निर्माण कर सकते हैं। सरकार के साथ मिलकर इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन एक नई दिशा और दशा प्रदान करेगा। - केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान

यही समय सत्य के साथ जुड़ने का है

नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा समाज को शक्तिशाली बना रहा ब्रह्माकुमारी संगठन : युद्धवीर सेठी

जम्मू-248/ए(ब्रह्माकुमारीज़ रोड)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ओम शांति मेडिटेशन सेंटर में आयोजित महा शिव जयंती महोत्सव एवं शिव ध्वजारोहण कार्यक्रम में युद्धवीर सेठी,उपाध्यक्ष भाजपा,जेके-यूटी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संगठन हमें आंतरिक, नैतिक मूल्य सिखाता है और समाज को आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली बनाता है। जब हम सभी को एहसास होगा कि भगवान एक है तो भाईचारे की भावना मज़बूत हो जाएगी। प्रो. जे.पी. शर्मा,कुलपति,एसकेयूएएसटी जम्मू ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था समाज के लिए निःस्वार्थ सेवा कर रही है। उन्होंने अपने अनुभव से कहा कि अगर हम वास्तविक शांति और खुशी का अनुभव करना चाहते हैं तो हमें ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू ज़रूर जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि यहाँ मन के प्रबंधन की शिक्षा दी जाती है। राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन दीदी,संचालिका ब्रह्माकुमारीज़ जम्मू-कश्मीर/लद्दाख ने कहा कि भगवान सत्य है और इस दुनिया को सभी बुराइयों से मुक्त करने के लिए सत्य के साथ जुड़ने का यही समय है। परमपिता परमात्मा शिव को अपनी बुराइयों को अर्पित करना ही सही अर्थ में महाशिवरात्रि मनाना है। डॉ. अक्षय शर्मा ने कहा कि यहाँ आकर मैं हमेशा शांति और आनंद महसूस करता हूँ। कार्यक्रम में ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. शारदा, ब्र.कु. सुदेश, ब्र.कु. नीरू तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे। वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. रविंदर भाई ने सभी का स्वागत किया तथा मंच संचालन किया। ब्र.कु. रोमल भाई ने सभी का धन्यवाद किया।

सही समय पर दूसरों के काम आने में ही जीवन की सार्थकता : महापौर

कटघोरा-कोरबा(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शिवरात्रि महोत्सव पर सभागृह कटघोरा,मेला ग्राउण्ड में आयोजित कार्यक्रम में राजकिशोर प्रसाद,महापौर नगर पालिका निगम कोरबा ने महाशिवरात्रि की बधाई देते हुए कहा कि सही समय पर, सही स्थान पर, सही क्षमता से, सही रूप से हम दूसरों के काम आ जायें तो हमारा जीवन सार्थक होगा। रतन मित्तल,अध्यक्ष,नगर पालिका परिषद् कटघोरा ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनों का निःस्वार्थ सेवा भाव सर्व को प्रभावित करता है। डॉ. के.सी. देबनाथ,अक्षय हॉस्पिटल कोरबा ने कहा कि जीवन यात्रा, एक लम्बी आध्यात्मिक यात्रा है। इस यात्रा के लिए सहज राजयोग सीखना आवश्यक है जिसका ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है। किशोर अग्रवाल ने कहा कि मैं संस्था के मुख्यालय आबू पर्वत गया हूँ, वह एक स्वच्छता और आध्यात्मिकता का प्रतीक है। श्रीराम अग्रवाल ने कहा कि यहाँ आकर मुझे एक सुखद अनुभूति हो रही है। ब्र.कु. श्रुति बहन,मा.आबू ने कहा कि आत्मा 84 जन्मों के चक्र में आकर स्वयं के अस्तित्व को भूल गई है। यही सर्व दुःखों का कारण है। ब्र.कु. बिन्दू बहन ने कहा कि शिव निराकार ज्योति स्वरूप हैं जो कि कलियुग के अंत तथा सतयुग के आदि में इस सृष्टि पर ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना का कार्य संगमयुग पर करते हैं। ब्र.कु. रुक्मणी बहन ने कहा कि सहज राजयोग के अभ्यास से सुख शांति आनंद का प्रवाह जीवन में स्वतः आता है। ब्र.कु. लीना बहन ने राजयोग का अभ्यास कराया। शेखर राम भाई ने मंच का संचालन किया।

जीवन को राममय बनाने से आयेगा 'स्वर्णिम भारत' रामराज्य

महाशिवरात्रि पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन' का भव्य उद्घाटन

सरिया-बिलासपुर (छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' परियोजना के अंतर्गत महाशिवरात्रि के अवसर पर एक मास के 'द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन' के उद्घाटन कार्यक्रम में स्वप्निल स्वर्णकार,अध्यक्ष,नगर पंचायत सरिया ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एक आध्यात्मिक संस्था है जो हमारे समाज को सही दिशा देने में अद्भुत कार्य कर रही है। राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी,संचालिका, ब्रह्माकुमारीज़ टिकरापारा बिलासपुर ने कहा कि आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत में जाने के लिए क्रोध को छोड़, प्रेम को धारण करना है। उन्होंने कहा कि हमें अपने जीवन में सिर्फ राम-राम नहीं कहना बल्कि जीवन को ही राममय बनाना है तभी स्वर्णिम भारत राम राज्य आएगा। आचार्य कीर्तन शुभकर,संस्थापक, ओंकार शक्ति केन्द्र बरमकेला ने कहा कि स्वर्णिम भारत का जो संकल्प संकल्पित है भारत को स्वर्णिम भारत बनाने में, वह आध्यात्मिक शक्ति से ही संभव है। इस अवसर पर भूषण लाल वर्मा,अध्यक्ष,विद्युत उपभोक्ता फोरम बिलासपुर, शिव अग्रवाल,अध्यक्ष, जिला चावल उद्योग जांजगीर चम्पा व किशन सुल्तानिया,कोषाध्यक्ष, अग्रसेन जन कल्याण ट्रस्ट ने भी शुभकामनायें दीं। ब्र.कु. राधिका बहन,सह संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़ रायगढ़ एवं जशपुर ने भी अपने विचार रखे। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनयना बहन ने एक मास के आयोजन के अंतर्गत आगामी कार्यक्रमों से सभी को अवगत कराया। कार्यक्रम संचालन ब्र.कु. नीलू बहन,संचालिका, ब्रह्माकुमारीज़ पत्थलगांव ने किया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th March, 2022
स्वामी - राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन, प्रकाशक एवं सम्पादक - गंगाधर नरसिंघानी, मुद्रक - श्री मुकेश मंगल, डी.बी. कॉर्प.लि. द्वारा भास्कर प्रिन्टिंग प्रेस,शिवदासपुरा, टोंक रोड,जयपुर से मुद्रित एवं ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड(राज.)- 307510
See Latest News - www.omshantimedia.org